CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2012 with Solution PDF-Set 2/2/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 7, 8, 10, 14 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1(क). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: स्वामी विवेकानंद भारत में राष्ट्रीय स्वतंत्रता-आंदोलन का सूत्रपात करने वाले महानायकों में थे। स्वाधीनता-संग्राम में भाग लेने वाले तमाम भारतीयों ने उनसे प्रेरणा ली थी। उन्होंने न केवल आध्यात्मिक उत्थान का मार्ग दिखाया, बल्कि सामाजिक जीवन जीने का तरीक़ा भी सिखाया। आज हम ऐसी दुनिया में जी रहे हैं जहाँ हिंसा है, घृणा है, आतंकवाद है, आत्मघाती दस्ता है। अपने को संगत और नैतिक ठहराने के लिए धार्मिक नारों का उपयोग किया जाता है। लोग इस बात पर विश्वास करते हैं कि 'मेरा भगवान तुम्हारे भगवान से बड़ा है!' पर यदि कोई व्यक्ति स्वामी विवेकानंद की शिक्षा के अनुसार दरिद्रनारायण की सेवा में आस्था रखता है तो वह आतंकवादी कैसे हो सकता है। सच्चा धार्मिक व्यक्ति उदार होता है, वह किसी आत्मघाती दस्ते में कैसे शामिल हो सकता है! स्वामी विवेकानंद के पास ऐसे तमाम सवालों के जवाब हैं और विभिन्न धर्मों तथा मतों के स्वतंत्र अस्तित्व के लिए समुचित तर्क भी हैं। स्वामी जी ने विश्व धर्म-सम्मेलन में बिलकुल ठीक कहा था — "यदि कोई सोचता है कि उसी का धर्म पले-बढ़े और दूसरों के धर्म नष्ट हो जाएँ, तो ऐसे लोगों की दुर्बुद्धि पर मुझे दया आती है। मैं उसे बताना चाहता हूँ कि बहुत जल्द, तमाम बाधाओं के बावजूद, प्रत्येक धर्म के बैनर पर लिखा जाएगा — 'लड़ो नहीं, मदद करो'; 'विनाश नहीं, निर्माण करो'; 'वैमनस्य नहीं, सौहार्द और शांति' ।" उपर्युक्त गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक गद्यांश के केंद्रीय विचार को संक्षेप में व्यक्त करता है।
- यहाँ विवेकानंद के संदेश के माध्यम से धार्मिक उदारता, सेवा और शांति का महत्त्व बताया गया है।

चरण 1: केंद्रीय विचार पहचानें गद्यांश स्वामी विवेकानंद की प्रेरणादायक भूमिका से आरंभ होता है। इसके बाद धर्म के नाम पर हिंसा और घृणा का विरोध करते हुए सेवा, सहिष्णुता तथा सौहार्द को सच्चे धर्म का आधार बताया गया है।

चरण 2: शीर्षक का आधार चुनें अंत में सभी धर्मों के लिए मदद, निर्माण और शांति का संदेश दिया गया है। इसलिए शीर्षक में विवेकानंद और उनके धार्मिक सौहार्द के संदेश को स्थान देना पूरे गद्यांश का भाव समेटता है।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है : स्वामी विवेकानंद का धार्मिक सौहार्द का संदेश।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय केवल आरंभ के स्वतंत्रता-आंदोलन को न लें; अंतिम संदेश में आए सौहार्द और शांति को भी समेटें।

1(ख). स्वामी विवेकानंद को स्वतंत्रता-आंदोलन का महानायक क्यों कहा गया है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग-बोध के प्रश्न का उत्तर गद्यांश में दिए कारणों से बनता है।
- किसी महानायक की भूमिका समझाते समय उसके प्रभाव और उससे प्रेरित लोगों का उल्लेख आवश्यक है।

चरण 1: आरंभिक कथन पहचानें गद्यांश में स्वामी विवेकानंद को भारत के राष्ट्रीय स्वतंत्रता-आंदोलन का सूत्रपात करने वाले महानायकों में गिना गया है। इससे स्पष्ट है कि लेखक उनकी भूमिका को राष्ट्रीय स्वतंत्रता की प्रेरणा जगाने से जोड़ता है। उत्तर में इसी कथन को आधार बनाना चाहिए।

चरण 2: प्रेरणा और मार्गदर्शन स्पष्ट करें गद्यांश के अनुसार स्वाधीनता-संग्राम में भाग लेने वाले तमाम भारतीयों ने उनसे प्रेरणा ली थी। उन्होंने लोगों को केवल आध्यात्मिक उत्थान का मार्ग ही नहीं दिखाया, बल्कि सामाजिक जीवन जीने का तरीका भी सिखाया। इस प्रकार उनका प्रभाव व्यक्तिगत आत्मोन्नति से आगे बढ़कर समाज और राष्ट्र के जीवन तक पहुँचा।

चरण 3: निष्कर्ष स्वामी विवेकानंद राष्ट्रीय स्वतंत्रता-आंदोलन के प्रेरक महानायकों में थे। स्वतंत्रता-संग्राम में भाग लेने वाले भारतीयों ने उनसे प्रेरणा प्राप्त की तथा उनके आध्यात्मिक और सामाजिक मार्गदर्शन से प्रभावित हुए। इसी कारण उन्हें स्वतंत्रता-आंदोलन का महानायक कहा गया है।

त्वरित सुझाव: इस प्रश्न में गद्यांश की पहली पंक्तियों से दो आधार लें : आंदोलन का सूत्रपात और स्वतंत्रता-संग्रामियों को मिली प्रेरणा।

1(ग). आज के विश्व के नकारात्मक पहलू क्या-क्या हैं? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नकारात्मक पहलुओं की पहचान के लिए गद्यांश में बताई गई बुराइयों को अलग-अलग समझना चाहिए।
- इस गद्यांश में हिंसक व्यवहार के साथ उसे उचित ठहराने वाली धार्मिक संकीर्णता का भी उल्लेख है।

चरण 1: प्रत्यक्ष बुराइयाँ पहचानें लेखक आज की दुनिया में हिंसा, घृणा, आतंकवाद और आत्मघाती दस्तों की मौजूदगी को रेखांकित करता है। ये सभी मानव-जीवन और पारस्परिक शांति के विरोधी रूप हैं। उत्तर में इन चारों का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए, क्योंकि गद्यांश में इन्हें सीधे गिनाया गया है।

चरण 2: धार्मिक संकीर्णता का पक्ष समझें गद्यांश में बताया गया है कि लोग अपने आचरण को संगत और नैतिक ठहराने के लिए धार्मिक नारों का उपयोग करते हैं। अपने भगवान को दूसरे के भगवान से बड़ा मानने की सोच दूसरे धर्मों के प्रति असहिष्णुता दिखाती है। इस प्रकार धर्म का दुरुपयोग भी आज के विश्व का नकारात्मक पहलू है।

चरण 3: निष्कर्ष आज के विश्व के नकारात्मक पहलू हिंसा, घृणा, आतंकवाद, आत्मघाती दस्तों की सक्रियता तथा अपने आचरण को उचित ठहराने के लिए धार्मिक नारों का दुरुपयोग हैं। अपने धर्म को श्रेष्ठ और अन्य धर्मों को हीन मानने वाली संकीर्णता भी इनमें सम्मिलित है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में हिंसा और आतंकवाद गिनाने के बाद धार्मिक नारों के दुरुपयोग को भी जोड़ें; यही गद्यांश का अगला महत्त्वपूर्ण बिंदु है।

1(घ). आशय स्पष्ट कीजिए — मेरा भगवान तुम्हारे भगवान से बड़ा है। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आशय स्पष्ट करते समय कथन के शब्दार्थ से आगे उसका प्रसंगगत भाव बताना चाहिए।
- इस गद्यांश में भगवान की तुलना वाला कथन धार्मिक श्रेष्ठता के अहंकार और संकीर्ण दृष्टि को प्रकट करता है।

चरण 1: कथन का भाव खोलें मेरा भगवान तुम्हारे भगवान से बड़ा है कहने वाला व्यक्ति अपने आराध्य और अपने धर्म को सर्वश्रेष्ठ मानता है। इस आग्रह में वह दूसरे व्यक्ति की आस्था को कमतर समझता है। यहाँ बड़ा शब्द का आशय आकार से नहीं, बल्कि श्रेष्ठता के अनुचित दावे से है।

चरण 2: गद्यांश से संबंध जोड़ें गद्यांश में इस सोच को हिंसा, घृणा और धार्मिक नारों के दुरुपयोग के संदर्भ में रखा गया है। ऐसी मानसिकता दूसरे धर्मों के स्वतंत्र अस्तित्व और सम्मान को स्वीकार नहीं करती। इसके विपरीत स्वामी विवेकानंद सभी धर्मों के प्रति उदारता, मदद और सौहार्द का संदेश देते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि व्यक्ति धार्मिक संकीर्णता और अहंकार के कारण अपने धर्म तथा आराध्य को श्रेष्ठ और दूसरों के धर्म तथा आराध्य को हीन मानता है। यह दृष्टि समान सम्मान और धार्मिक सहिष्णुता के विरुद्ध है।

त्वरित सुझाव: आशय लिखते समय भगवान के आकार की तुलना न करें; अपने धर्म को श्रेष्ठ मानने की संकीर्ण मानसिकता स्पष्ट करें।

1(ङ). 'दरिद्रनारायण' से क्या तात्पर्य है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग में प्रयुक्त शब्द का अर्थ उसके साथ दिए गए विचार से समझा जाता है।
- दरिद्रनारायण शब्द में निर्धन व्यक्ति के प्रति ईश्वर जैसी श्रद्धा और सेवा का भाव निहित है।

चरण 1: शब्द के दोनों अंश समझें दरिद्र का अर्थ गरीब या निर्धन है और नारायण ईश्वर का नाम है। दोनों अंश मिलकर उस दृष्टि को व्यक्त करते हैं जिसमें निर्धन मानव में भी ईश्वर का स्वरूप देखा जाता है।

चरण 2: सेवा का भाव जोड़ें गद्यांश में दरिद्रनारायण की सेवा में आस्था रखने की बात कही गई है। इसलिए यहाँ केवल गरीबी का उल्लेख नहीं, बल्कि गरीबों के प्रति आदर रखते हुए उनकी सहायता करने का संदेश है।

चरण 3: निष्कर्ष दरिद्रनारायण से तात्पर्य ईश्वर का स्वरूप माने गए गरीब एवं अभावग्रस्त मनुष्यों से है; उनकी सेवा को ईश्वर की सेवा माना गया है।

त्वरित सुझाव: दरिद्रनारायण का अर्थ बताते समय निर्धन व्यक्ति और उसमें ईश्वर का रूप देखने की भावना, दोनों अवश्य लिखें।

1(च). स्वामी जी ने 'दुर्बुद्धि' किसे कहा है? उन्हें क्या समझाया गया है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में दो अपेक्षाएँ हैं : दुर्बुद्धि का आशय और स्वामी जी द्वारा दिया गया संदेश।
- उत्तर विश्व धर्म-सम्मेलन संबंधी उद्धरण पर आधारित होना चाहिए।

चरण 1: दुर्बुद्धि वाली सोच पहचानें स्वामी जी ने उस सोच को दुर्बुद्धि कहा है जिसमें कोई व्यक्ति चाहता है कि केवल उसका अपना धर्म पले-बढ़े और दूसरे धर्म नष्ट हो जाएँ। यह दूसरों के धर्म के प्रति असहिष्णुता और उनके अस्तित्व को मिटाने की कामना है। स्वामी जी को ऐसे लोगों की इस संकीर्ण बुद्धि पर दया आती है।

चरण 2: समझाए गए संदेश को स्पष्ट करें उन्होंने ऐसे लोगों को बताया कि तमाम बाधाओं के बावजूद शीघ्र ही प्रत्येक धर्म के बैनर पर सहयोग और शांति का संदेश लिखा जाएगा। धर्मों की दिशा लड़ाई के स्थान पर मदद, विनाश के स्थान पर निर्माण तथा वैमनस्य के स्थान पर सौहार्द और शांति की ओर होगी। इस संदेश में दूसरे धर्मों के स्वतंत्र अस्तित्व का सम्मान निहित है।

चरण 3: निष्कर्ष स्वामी जी ने केवल अपने धर्म की उन्नति और अन्य धर्मों के विनाश की कामना को दुर्बुद्धि कहा है। उन्होंने समझाया कि सभी धर्म अंततः लड़ाई छोड़कर मदद, विनाश छोड़कर निर्माण और वैमनस्य छोड़कर सौहार्द तथा शांति का संदेश देंगे।

त्वरित सुझाव: उत्तर दो हिस्सों में रखें : पहले दूसरे धर्मों के विनाश की संकीर्ण कामना, फिर मदद, निर्माण और शांति का संदेश।

1(छ). सच्चा धार्मिक व्यक्ति आतंकवादी क्यों नहीं हो सकता? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कारण बताते समय गद्यांश में सच्चे धार्मिक व्यक्ति के बताए गुणों को आधार बनाना चाहिए।
- उदारता और मानव-सेवा की भावना हिंसा तथा आतंक के उद्देश्य से मेल नहीं खाती।

चरण 1: सच्चे धार्मिक व्यक्ति के गुण पहचानें गद्यांश के अनुसार सच्चा धार्मिक व्यक्ति उदार होता है। स्वामी विवेकानंद की शिक्षा मानने वाला व्यक्ति दरिद्रनारायण की सेवा में आस्था रखता है। उसके लिए धर्म का अर्थ जरूरतमंद मनुष्यों की सहायता करना और दूसरों के

प्रति उदार व्यवहार रखना है।

चरण 2: आतंकवाद से विरोध स्पष्ट करें आतंकवाद और आत्मघाती दस्ते हिंसा तथा विनाश से जुड़े हैं, जबकि मानव-सेवा का भाव लोगों की सहायता करने का है। जो व्यक्ति दूसरों की पीड़ा दूर करना चाहता है, वह उन्हीं मनुष्यों को आतंकित या नष्ट करने का मार्ग कैसे अपना सकता है? इसलिए गद्यांश सच्ची धार्मिकता और आतंकवाद को परस्पर विरोधी बताता है।

चरण 3: निष्कर्ष सच्चा धार्मिक व्यक्ति उदार होता है और दरिद्रनारायण की सेवा में विश्वास करता है। वह मदद, सौहार्द और शांति का पक्षधर होता है। उसकी सेवाभावना हिंसा, घृणा और विनाश के विरुद्ध है; इसलिए वह आतंकवादी या आत्मघाती दस्ते का सदस्य नहीं हो सकता।

त्वरित सुझाव: इस कारण-प्रश्न में पहले उदारता और गरीबों की सेवा लिखें, फिर बताएं कि ये गुण आतंकवाद की हिंसा के विपरीत हैं।

1(ज). मिश्र वाक्य में बदलिए: स्वामी विवेकानंद भारत में राष्ट्रीय स्वतंत्रता-आंदोलन का सूत्रपात करने वाले महानायकों में थे। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मिश्र वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य तथा कम-से-कम एक आश्रित उपवाक्य होता है।
- विशेषण उपवाक्य किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है और प्रायः जो, जिसने अथवा जिन्होंने से आरंभ होता है।

चरण 1: विशेषण पदबंध पहचानिए मूल वाक्य में राष्ट्रीय स्वतंत्रता-आंदोलन का सूत्रपात करने वाले पदबंध से महानायकों की विशेषता बताई गई है। रूपांतरण में इसी पदबंध को विशेषण उपवाक्य बनाना है; स्वामी विवेकानंद के संबंध में दिया गया मूल अर्थ बनाए रखना है।

चरण 2: आश्रित उपवाक्य बनाइए प्रधान उपवाक्य में स्वामी विवेकानंद उन महानायकों में थे रखा जाएगा। करने वाले के स्थान पर जिन्होंने और सूत्रपात किया का प्रयोग करने से पूर्ण क्रिया वाला आश्रित उपवाक्य बन जाता है। जिन्होंने का संबंध उन महानायकों से है।

चरण 3: निष्कर्ष स्वामी विवेकानंद उन महानायकों में थे जिन्होंने भारत में राष्ट्रीय स्वतंत्रता-आंदोलन का सूत्रपात किया।

त्वरित सुझाव: करने वाले जैसे विशेषण पदबंध को जिन्होंने के साथ पूर्ण क्रिया वाला उपवाक्य बनाइए और मूल आशय बनाए रखिए।

1(झ). उपसर्ग अलग कीजिए — दुर्बुद्धि, बावजूद। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपसर्ग मूल शब्द के पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन अथवा विशेषता उत्पन्न करता है।
- उपसर्ग अलग करते समय मूल शब्द और उसके आगे जुड़े अंश, दोनों की पहचान आवश्यक है।

चरण 1: दुर्बुद्धि का विभाजन कीजिए दुर्बुद्धि में मूल शब्द बुद्धि है और उसके पहले दुर् उपसर्ग लगा है। इस उपसर्ग से बुराई या दोष का अर्थ जुड़ता है; अतः दुर्बुद्धि का अर्थ बुरी अथवा दूषित बुद्धि है। दुर् का र् अगले अक्षर के साथ संयुक्त रूप में दिखाई देता है।

चरण 2: बावजूद का विभाजन कीजिए बावजूद में बा उपसर्ग और वजूद मूल शब्द है। बा का अर्थ साथ अथवा सहित होता है। बावजूद का प्रयोग किसी बात के होते हुए भी के अर्थ में किया जाता है। इसलिए केवल ब को उपसर्ग मानकर अलग करना सही नहीं होगा।

चरण 3: निष्कर्ष दुर्बुद्धि: दुर् + बुद्धि; उपसर्ग — दुर्। बावजूद: बा + वजूद; उपसर्ग — बा।

त्वरित सुझाव: पहले बुद्धि और वजूद जैसे मूल शब्द पहचानिए; उनके पहले बचा हुआ पूरा अंश उपसर्ग के रूप में लिखिए।

1(ञ). प्रत्यय अलग कीजिए — आध्यात्मिक, आत्मघाती। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रत्यय मूल शब्द के अंत में जुड़ता है और उससे नया शब्द बनता है।
- प्रत्यय जुड़ने पर मूल शब्द के स्वर में परिवर्तन हो सकता है; इसलिए केवल दिखाई देने वाले अक्षरों को यांत्रिक ढंग से अलग नहीं करना चाहिए।

चरण 1: आध्यात्मिक का निर्माण समझिए आध्यात्मिक का मूल शब्द अध्यात्म है और प्रत्यय इक है। इक जुड़ने पर आरंभिक अ स्वर में वृद्धि होकर आ हो जाता है। अध्यात्म से संबंधित अर्थ देने वाला आध्यात्मिक इसी प्रकार बनता है; यहाँ मिक पूरा प्रत्यय नहीं है।

चरण 2: आत्मघाती का निर्माण समझिए आत्मघाती में आत्मघात मूल शब्द है और ई प्रत्यय जुड़ा है। यह प्रत्यय करने वाले का अर्थ देता है। अतः आत्मघात करने वाला आत्मघाती कहलाता है। शब्द के अंतिम व्यंजन पर दिखाई देने वाली ई की मात्रा प्रत्यय की उपस्थिति बताती है।

चरण 3: निष्कर्ष आध्यात्मिक: अध्यात्म + इक; प्रत्यय — इक। आत्मघाती: आत्मघात + ई; प्रत्यय — ई।

त्वरित सुझाव: आध्यात्मिक में अध्यात्म के आरंभिक स्वर का परिवर्तन ध्यान में रखिए; आत्मघाती में अंतिम ई को प्रत्यय पहचानिए।

2(क). निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: बेटी विदा होने के बाद घर को देखती है माँ ज़रा-सी आवाज़ में भी बेटी को सुनती है माँ। आँगन-चौबारे का सूनापन देखकर अब डरती है, और — जहाँ बैठकर बेटी माँ को धूप मला करती थी वहाँ की छाँव से भी अब डरती है माँ। सजे पड़े हैं गुड्डे-गुड़ियाँ पता नहीं कब बोल पड़ें — इसलिए उस तरफ़ नहीं देखती है माँ। बेटी के हाथ के कसीदे, दीवारों पर लटकी तस्वीरें जिन्हें देख ख़ुश होती थी अब आँसू छलका देती है माँ। उसकी किताबों के उड़ते पत्रे, कंघी में उलझे बाल... कभी गुस्सा होती थी, आज सीने से लगा लेती है माँ! 'अभी चली जाऊँ बेटी के पास — लेकिन..., अच्छा नहीं लगेगा...' समय से लड़ती इसी उधेड़-बुन में रहती है माँ! आँगन-चौबारे के सूनेपन का क्या कारण है और इसका माँ पर क्या प्रभाव दिखाई देता है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में बेटी की विदाई के बाद माँ की मनःस्थिति और घर के बदल गए अनुभव का चित्रण है।
- कारण और प्रभाव वाले प्रश्न में घटना तथा उससे उत्पन्न भावना, दोनों बतानी चाहिए।

चरण 1: सूनेपन का कारण पहचानिए काव्यांश की आरंभिक पंक्ति बेटी विदा होने के बाद की स्थिति बताती है। बेटी की उपस्थिति से घर में जो चहल-पहल और अपनापन था, वह उसके चले जाने पर नहीं रहा। इसी अभाव से आँगन और चौबारा माँ को सूने लगते हैं।

चरण 2: माँ पर पड़े प्रभाव को समझिए कवि कहता है कि आँगन-चौबारे का सूनापन देखकर अब माँ डरती है। जहाँ बेटी बैठकर उसकी सेवा करती थी, वहाँ की छाँव भी उसे डराती है। बेटी की अनुपस्थिति माँ के भीतर अकेलापन, व्याकुलता और बिछोह का दुःख उत्पन्न करती है।

चरण 3: निष्कर्ष बेटी के विदा हो जाने से आँगन-चौबारा सूना हो गया है। यह सूनापन माँ को डराता है और बेटी के अभाव से वह अकेलापन तथा व्याकुलता अनुभव करती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले बेटी की विदाई को कारण बताइए, फिर अब डरती है से माँ पर पड़े प्रभाव को स्पष्ट कीजिए।

2(ख). माँ गुड्डे-गुड़ियों की ओर क्यों नहीं देखती? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बेटी की वस्तुएँ माँ के लिए उससे जुड़ी स्मृतियों का माध्यम बन गई हैं।
- काव्य में निर्जीव वस्तुओं के बोल पड़ने की कल्पना मनुष्य के गहरे भावनात्मक लगाव को व्यक्त कर सकती है।

चरण 1: काव्यांश का संकेत पहचानिए सजे पड़े गुड्डे-गुड़ियों के विषय में माँ सोचती है कि पता नहीं वे कब बोल पड़ें। यह उसके मन में बसी बेटी की स्मृतियों की तीव्रता है। खिलौने उसे बेटी की उपस्थिति और उसके साथ बिताए समय का अनुभव कराते हैं।

चरण 2: न देखने का भाव समझिए बेटी विदा हो चुकी है, इसलिए उससे जुड़ी वस्तुओं को देखने से माँ का विरह और बढ़ जाता है। गुड्डे-गुड़ियों के बोल पड़ने की कल्पना उसे बेटी की यादों में खींच लेगी। इसी भावनात्मक पीड़ा के कारण वह उस ओर देखने से बचती है।

चरण 3: निष्कर्ष माँ को लगता है कि बेटी के गुड्डे-गुड़ियाँ कभी भी बोल पड़ेंगे और उसकी यादों को जगा देंगे। बेटी के बिछोह की पीड़ा बढ़ने के कारण वह उनकी ओर नहीं देखती।

त्वरित सुझाव: गुड्डे-गुड़ियों के बोल पड़ने को वास्तविक घटना न मानिए; इसे माँ की स्मृति और बेटी से भावनात्मक लगाव से जोड़िए।

2(ग). बेटी की कौन-सी आदतें माँ को पसंद नहीं थीं? आज उसकी क्या प्रतिक्रिया दिखाई पड़ती है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में पहले और अब की प्रतिक्रिया के अंतर से माँ की बदली मनःस्थिति स्पष्ट होती है।
- बेटी की विदाई के बाद उसकी साधारण वस्तुएँ भी माँ के लिए प्रिय स्मृतियाँ बन गई हैं।

चरण 1: पहले अप्रिय लगने वाली आदतें बताइए बेटी की किताबों के पन्ने इधर-उधर उड़ते रहते थे और कंघी में उसके बाल उलझे रह जाते थे। इन वस्तुओं को व्यवस्थित न रखने की आदतों पर माँ पहले गुस्सा होती थी। प्रश्न का आधार इन्हीं वस्तुओं पर केंद्रित पंक्तियाँ हैं।

चरण 2: वर्तमान प्रतिक्रिया से तुलना कीजिए बेटी के चले जाने के बाद वही किताबों के पन्ने और कंघी में उलझे बाल माँ को उसके पास होने का अनुभव कराते हैं। इसलिए अब माँ उन पर नाराज़ होने के स्थान पर उन्हें स्नेहपूर्वक सीने से लगा लेती है।

चरण 3: निष्कर्ष माँ को बेटी के किताबों के पन्ने बिखरे छोड़ना और कंघी में बाल उलझे रहने देना पसंद नहीं था। अब वह बेटी की याद में उन्हीं वस्तुओं को सीने से लगा लेती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को पहले और अब के आधार पर लिखिए: पहले अव्यवस्था पर क्रोध था, अब उन्हीं वस्तुओं के प्रति वात्सल्य है।

2(घ). माँ की 'उधेड़-बुन' क्या है? स्पष्ट कीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उधेड़-बुन मन में चलने वाले ऐसे द्वंद्व को कहते हैं जिसमें व्यक्ति किसी निर्णय तक नहीं पहुँच पाता।
- माँ का द्वंद्व बेटी से तत्काल मिलने की इच्छा और ऐसा करना अच्छा न लगने के संकोच के बीच है।

चरण 1: मिलने की इच्छा पहचानिए माँ बेटी के अभाव में लगातार उसे याद करती है। उसका मन चाहता है कि अभी बेटी के पास चली जाए। बेटी की वस्तुओं और घर के सूनेपन से उसकी याद बार-बार उभरती है, जिससे मिलने की यह इच्छा और तीव्र हो जाती है।

चरण 2: रोकने वाले संकोच को पहचानिए इच्छा के तुरंत बाद माँ के मन में आता है कि ऐसा करना अच्छा नहीं लगेगा। इसलिए वह

जाना चाहकर भी निर्णय नहीं ले पाती। काव्यांश किसी निश्चित व्यक्ति की रोक नहीं बताता; माँ अपने ही स्नेह और संकोच के बीच समय काटती रहती है।

चरण 3: निष्कर्ष माँ की उधेड़-बुन यह है कि उसका मन तुरंत बेटी के पास जाने को चाहता है, पर वह यह सोचकर रुक जाती है कि ऐसा करना अच्छा नहीं लगेगा। इसी इच्छा और संकोच में वह उलझी रहती है।

त्वरित सुझाव: माँ के द्वंद्व के दोनों पक्ष लिखिए: अभी मिलने जाना और अच्छा नहीं लगेगा सोचकर स्वयं को रोक लेना।

2(ङ). आशय स्पष्ट कीजिए: ज़रा-सी आवाज़ में भी बेटी को सुनती है माँ! [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पंक्ति का आशय बेटी की अनुपस्थिति में माँ के गहरे स्नेह, स्मरण और आतुरता को स्पष्ट करना है।
- भावार्थ लिखते समय कथन के पीछे की मन:स्थिति बतानी चाहिए; केवल उन्हीं शब्दों को दोहराना पर्याप्त नहीं है।

चरण 1: पंक्ति को प्रसंग से जोड़िए बेटी विदा होकर घर से जा चुकी है, लेकिन माँ के मन में उसकी उपस्थिति बनी हुई है। घर की वस्तुएँ और परिचित स्थान उसे बेटी की याद दिलाते हैं। इसलिए सुनाई पड़ने वाली छोटी-सी ध्वनि भी माँ के मन में बेटी का स्मरण जगा देती है।

चरण 2: आवाज़ के अनुभव का अर्थ समझिए माँ हर हल्की आहट में बेटी की आवाज़ या उसके आने का आभास पाती है। यह बेटी के वास्तव में घर में होने का कथन नहीं, बल्कि माँ की भावनात्मक व्याकुलता का चित्रण है। उसका ध्यान बेटी में इतना रमा है कि सामान्य आवाज़ें भी उसी से जुड़ जाती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष आशय यह है कि बेटी की विदाई के बाद भी माँ का मन उसी में रमा रहता है। गहरे स्नेह और बिछोह के कारण उसे हर छोटी-सी आवाज़ में बेटी की आवाज़ या उसकी उपस्थिति का आभास होता है।

त्वरित सुझाव: इस पंक्ति का अर्थ बताते समय हल्की आहट को माँ के स्नेह और बेटी की तीव्र याद से जोड़िए।

3. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए: (क) इंटरनेट की दुनिया (ख) भ्रष्टाचार-उन्मूलन — क्यों और कैसे (ग) प्रगति-पथ पर भारत (घ) राष्ट्रभाषा राष्ट्र की पहचान [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में भूमिका, विषय का क्रमबद्ध विस्तार और उपसंहार होना चाहिए। प्रत्येक अनुच्छेद मुख्य विषय से जुड़ा एक विचार विकसित करे।
- सामाजिक विषय पर कारण, प्रभाव और व्यावहारिक उपाय प्रस्तुत करें। उपलब्धियों के साथ चुनौतियों को भी स्थान दें और अप्रमाणित आँकड़ों से बचें।

चरण 1: चारों विषयों की रूपरेखा समझिए इंटरनेट पर उपयोग, जोखिम और विवेकपूर्ण व्यवहार; भ्रष्टाचार पर दुष्परिणाम, कारण और निवारण; भारत की प्रगति पर उपलब्धियाँ, चुनौतियाँ और नागरिक दायित्व; तथा राष्ट्रभाषा पर भाषा, संस्कृति और राष्ट्रीय एकता को क्रम दें। परीक्षा में निर्देशानुसार एक विषय चुनना है; अभ्यास के लिए चारों विषयों के नमूना निबंध नीचे दिए गए हैं।

चरण 2: (क) इंटरनेट की दुनिया पर निबंध लिखिए **इंटरनेट की दुनिया**

इंटरनेट ने दूरियों को छोटा करके ज्ञान और संचार के नए द्वार खोल दिए हैं। अब एक स्थान पर बैठा व्यक्ति दूर देश के लोगों से संवाद कर सकता है तथा विभिन्न विषयों की जानकारी प्राप्त कर सकता है। इसने हमारे पढ़ने, काम करने और विचार बाँटने के ढंग को बदल दिया है।

शिक्षा के क्षेत्र में इंटरनेट विशेष उपयोगी है। विद्यार्थी पुस्तकालयों, शिक्षण-सामग्री और विशेषज्ञों के विचारों तक पहुँच सकते हैं। ई-मेल से संदेश शीघ्र पहुँचते हैं। व्यापार, बैंकिंग और सार्वजनिक सेवाओं की जानकारी पाने में भी सुविधा होती है। अपनी रचनाएँ और अनुभव साझा करने के लिए सामान्य व्यक्ति को भी मंच मिलता है।

किंतु सूचना की अधिकता हमेशा ज्ञान नहीं बन जाती। गलत समाचार, छलपूर्ण संदेश और निजी जानकारी की चोरी गंभीर समस्याएँ हैं। बिना सोचे सामग्री साझा करने से भ्रम फैल सकता है। लगातार स्क्रीन पर समय बिताने से पढ़ाई, स्वास्थ्य और पारिवारिक संबंध प्रभावित होते हैं। जिनके पास साधन नहीं हैं, वे इन अवसरों से वंचित रह जाते हैं।

इसलिए इंटरनेट का उपयोग निश्चित उद्देश्य और सीमित समय के साथ करना चाहिए। सूचना के स्रोत जाँचें, अनजान लोगों को निजी विवरण न दें और दूसरों की निजता का सम्मान करें। तकनीक तभी सार्थक है जब वह हमारी समझ, संवेदना और कार्यक्षमता बढ़ाए। विवेकपूर्ण उपयोग से इंटरनेट मानव-विकास का सशक्त माध्यम बन सकता है।

चरण 3: (ख) भ्रष्टाचार-उन्मूलन पर निबंध लिखिए **भ्रष्टाचार-उन्मूलन — क्यों और कैसे**

निजी लाभ के लिए पद, अधिकार या सार्वजनिक संसाधनों का अनुचित उपयोग भ्रष्टाचार है। रिश्वत, पक्षपात और सार्वजनिक धन का दुरुपयोग इसके विभिन्न रूप हैं। यह केवल आर्थिक अपराध नहीं, बल्कि समाज के विश्वास पर चोट है।

भ्रष्टाचार का उन्मूलन आवश्यक है क्योंकि इससे न्याय और समान अवसर बाधित होते हैं। योग्य व्यक्ति पीछे रह जाता है और साधन-संपन्न व्यक्ति अनुचित लाभ पा लेता है। विकास के लिए निर्धारित धन का दुरुपयोग होने पर विद्यालयों, अस्पतालों और सड़कों की गुणवत्ता गिरती है। इसका सबसे अधिक नुकसान उन लोगों को होता है जिनकी आवाज़ पहले ही कमजोर है।

लोभ, अपारदर्शी प्रक्रियाएँ, जवाबदेही का अभाव और गलत काम को सामान्य मान लेना इस समस्या को बढ़ाते हैं। केवल दूसरों को दोष देकर इससे छुटकारा नहीं मिल सकता। समाज में सफलता का मूल्यांकन धन के बजाय ईमानदारी और उपयोगी कार्य से भी होना चाहिए।

समाधान के लिए सरकारी प्रक्रियाएँ सरल, स्पष्ट और समयबद्ध बनें। सार्वजनिक व्यय की जानकारी सुलभ हो तथा शिकायतों की निष्पक्ष जाँच हो। दोष सिद्ध होने पर प्रभावी कार्रवाई और शिकायतकर्ता की सुरक्षा आवश्यक हैं। विद्यालय तथा परिवार सत्यनिष्ठा का अभ्यास कराएँ। नागरिक अनुचित लाभ लेने से इनकार करें और अनियमितताओं के विरुद्ध जिम्मेदारी से आवाज़ उठाएँ।

भ्रष्टाचार का उन्मूलन प्रशासन और समाज का साझा दायित्व है। जब संस्थागत सुधारों के साथ व्यक्तिगत आचरण बदलेगा, तभी विकास का लाभ न्यायपूर्ण ढंग से सब तक पहुँचेगा।

चरण 4: (ग) प्रगति-पथ पर भारत पर निबंध लिखिए **प्रगति-पथ पर भारत**

भारत विविध भाषाओं, संस्कृतियों और परंपराओं का विशाल देश है। स्वतंत्रता के बाद उसने अनेक कठिनाइयों के बीच विकास की दिशा में कदम बढ़ाए हैं। उसकी प्रगति का आधार केवल संसाधन नहीं, बल्कि लोगों का श्रम, प्रतिभा और लोकतांत्रिक सहभागिता भी है।

कृषि, उद्योग, शिक्षा और वैज्ञानिक अनुसंधान में देश ने अपनी क्षमताएँ विकसित की हैं। सिंचाई और कृषि तकनीक के विस्तार ने उत्पादन बढ़ाने में सहायता की है। अंतरिक्ष-अनुसंधान, संचार तथा सूचना-प्रौद्योगिकी ने नए अवसर खोले हैं। सड़क, रेल और अन्य सुविधाओं का विकास दूरस्थ क्षेत्रों को जोड़ता है। महिलाओं और युवाओं की बढ़ती भागीदारी सामाजिक परिवर्तन की आशा जगाती है।

फिर भी प्रगति का चित्र तभी पूरा होगा जब उसकी चुनौतियाँ भी देखी जाएँ। गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा और सामाजिक भेदभाव अनेक नागरिकों को पीछे रखते हैं। शहर और गाँव के अवसरों में अंतर है। प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध उपयोग विकास की स्थिरता पर प्रश्न उठाते हैं।

आगे बढ़ने के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य-सुविधा और रोजगार के अवसरों का विस्तार जरूरी है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ प्रकृति की रक्षा तथा सामाजिक सद्भाव पर ध्यान देना होगा। नागरिक अपने काम में ईमानदारी बरतें, सार्वजनिक संपत्ति बचाएँ और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में भाग लें।

भारत की वास्तविक प्रगति वह होगी जिसमें अंतिम पंक्ति के व्यक्ति का जीवन भी बेहतर बने। समान अवसर, संवेदनशील शासन और जिम्मेदार नागरिकता देश को अधिक न्यायपूर्ण तथा समृद्ध भविष्य की ओर ले जा सकते हैं।

चरण 5: (घ) राष्ट्रभाषा राष्ट्र की पहचान पर निबंध लिखिए **राष्ट्रभाषा राष्ट्र की पहचान**

भाषा केवल बातचीत का साधन नहीं, बल्कि किसी समाज की स्मृति, संस्कृति और अनुभवों की वाहक है। लोकगीत, साहित्य, कहावतें तथा जीवन-मूल्य भाषा के माध्यम से पीढ़ियों तक पहुँचते हैं। इसी अर्थ में राष्ट्र को जोड़ने वाली भाषा उसकी पहचान का महत्वपूर्ण अंग बनती है।

भारत बहुभाषी देश है। उसकी पहचान अनेक भाषाओं के सम्मिलित योगदान से बनी है। हिंदी व्यापक जन-संपर्क और विचारों के आदान-प्रदान में उपयोगी भूमिका निभाती है। विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच सहज संवाद बढ़ने से परस्पर समझ और राष्ट्रीय एकता मजबूत होती है। स्वतंत्रता आंदोलन में भी भारतीय भाषाओं ने जनजागरण का कार्य किया।

किसी संपर्क-भाषा का विकास अन्य भाषाओं के सम्मान के साथ होना चाहिए। मातृभाषा व्यक्ति को अपने परिवेश से जोड़ती है, जबकि दूसरी भाषाओं का ज्ञान उसके अनुभव का विस्तार करता है। किसी भाषा को श्रेष्ठ और दूसरी को हीन समझना राष्ट्रीय एकता के अनुकूल नहीं है। हमारी भाषाई विविधता एक साझा सांस्कृतिक संपदा है।

हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में विज्ञान, तकनीक और आधुनिक विषयों की अच्छी सामग्री उपलब्ध कराना जरूरी है। अनुवाद, पुस्तकालय और सरल प्रशासनिक भाषा ज्ञान को अधिक लोगों तक पहुँचा सकते हैं। युवाओं को अपनी भाषा में पढ़ने-लिखने के साथ दूसरी भाषाएँ सीखने के अवसर भी मिलने चाहिए।

राष्ट्र की पहचान भाषा के प्रति प्रेम से समृद्ध होती है, भाषाई आग्रह से नहीं। हिंदी को आत्मीय संवाद की भाषा बनाते हुए सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करना ही राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने का मार्ग है।

चरण 6: निष्कर्ष चारों निबंध भूमिका, संतुलित विवेचन और सार्थक उपसंहार के क्रम में विकसित हैं। चुने गए विषय पर स्पष्ट विचार, प्रासंगिक उदाहरण तथा शुद्ध और सहज भाषा निबंध को प्रभावी बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: विषय चुनते ही भूमिका, दो मुख्य विचार, एक चुनौती और समाधान की रूपरेखा बनाएँ; इंटरनेट और प्रगति जैसे विषयों में लाभ के साथ सीमाएँ भी लिखें।

---

4. आप सपरिवार अपनी गाड़ी से घर लौट रहे थे कि एक दुर्घटना की चपेट में आ गए। पुलिस मौक़े पर पहुँची पर व्यर्थ के प्रश्नों में उलझी रही। अनजान दर्शकों ने अस्पताल पहुँचाया। पुलिस अब रिपोर्ट भी नहीं लिखना चाहती। पूरी घटना का संक्षिप्त विवरण देते हुए पुलिस आयुक्त को पत्र लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- औपचारिक शिकायत-पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद और पता, विषय, संबोधन, तथ्यात्मक विवरण, अपेक्षित कार्रवाई तथा समापन होता है।
- शिकायत विनम्र और स्पष्ट हो। दुर्घटना, पुलिस की उदासीनता, दर्शकों की सहायता और रिपोर्ट दर्ज करने से इनकार का क्रमवार उल्लेख करके पुलिस आयुक्त से जाँच व कार्रवाई का अनुरोध करें।

चरण 1: प्रारूप और विषय-वस्तु की योजना बनाइए पत्र पुलिस आयुक्त को संबोधित होगा। विषय में दुर्घटना की रिपोर्ट दर्ज न करने और पुलिस की लापरवाही की शिकायत स्पष्ट करें। पहले दुर्घटना का समय, स्थान और परिस्थिति लिखें। फिर बताएँ कि पुलिस ने तत्काल सहायता के बजाय अनावश्यक प्रश्नों में समय गँवाया, जबकि अनजान दर्शकों ने अस्पताल पहुँचाया। अंत में रिपोर्ट दर्ज करने, दुर्घटना की जाँच और संबंधित पुलिसकर्मियों के आचरण की जाँच का अनुरोध रखें। नीचे नमूना पत्र में स्थान, नाम और दिनांक उदाहरण के रूप में दिए गए हैं।

चरण 2: पूरा औपचारिक पत्र लिखिए 25, विकास नगर
नई दिल्ली
19 मार्च, 2012
सेवा में,
पुलिस आयुक्त
दिल्ली पुलिस
नई दिल्ली

विषय: दुर्घटना की रिपोर्ट दर्ज न करने और पुलिस की उदासीनता की शिकायत।

महोदय,

मैं आपका ध्यान एक सड़क-दुर्घटना के बाद पुलिस के असहयोगपूर्ण व्यवहार की ओर दिलाना चाहता हूँ। 17 मार्च, 2012 की शाम लगभग सात बजे मैं सपरिवार अपनी गाड़ी से घर लौट रहा था। विकास नगर के मुख्य चौराहे के निकट एक तेज रफ्तार वाहन ने हमारी गाड़ी को टक्कर मार दी। दुर्घटना में मुझे तथा मेरे परिवार के सदस्यों को चोटें आईं और गाड़ी भी क्षतिग्रस्त हो गई।

कुछ समय बाद पुलिस घटनास्थल पर पहुँची, किंतु घायल लोगों को तत्काल अस्पताल पहुँचाने की व्यवस्था करने के बजाय पुलिसकर्मी अनावश्यक प्रश्न पूछते रहे। अंततः वहाँ उपस्थित कुछ अनजान दर्शकों ने हमारी स्थिति देखकर हमें अस्पताल पहुँचाया, जहाँ हमारा उपचार हुआ। उनका सहयोग हमारे लिए अत्यंत सहायक सिद्ध हुआ।

उपचार के बाद मैंने स्थानीय थाने में घटना की रिपोर्ट दर्ज कराने का प्रयास किया। घटना का विवरण देने के बावजूद संबंधित कर्मचारी रिपोर्ट लिखने में टालमटोल कर रहे हैं। इससे दुर्घटना की जाँच बाधित हो रही है और हमें मानसिक परेशानी उठानी पड़ रही है।

आपसे विनम्र अनुरोध है कि हमारी रिपोर्ट शीघ्र दर्ज कराकर दुर्घटना की निष्पक्ष जाँच कराएँ। साथ ही संबंधित पुलिसकर्मियों की उदासीनता तथा रिपोर्ट दर्ज न करने की शिकायत की भी जाँच कराकर उचित कार्रवाई करें। कृपया की गई कार्रवाई से मुझे अवगत कराने का निर्देश दें।

धन्यवाद।

भवदीय

अमित कुमार

चरण 3: निष्कर्ष पत्र में दुर्घटना और पुलिस के व्यवहार का क्रमबद्ध विवरण है। दर्शकों की सहायता का उल्लेख करते हुए रिपोर्ट दर्ज कराने, निष्पक्ष जाँच और पुलिस की उदासीनता पर कार्रवाई की स्पष्ट माँग की गई है।

त्वरित सुझाव: इस पत्र में चार बातें अवश्य जाँचें: दुर्घटना, पुलिस के व्यर्थ प्रश्न, दर्शकों द्वारा अस्पताल पहुँचाना और रिपोर्ट से इनकार; अंत में अपेक्षित कार्रवाई स्पष्ट लिखें।

अथवा

4. ग्रीष्मावकाश में आपका 'सेवादल' ग़रीब बस्तियों में सेवा-कार्य करना चाहता है। अपने प्रस्तावित कार्यक्रम का संक्षेप में उल्लेख करते हुए किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए जिसमें समान विचारधारा के अन्य युवकों से अपने समूह से जुड़ने का आग्रह किया गया हो। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को लिखा गया पत्र जनसामान्य तक सामाजिक विषय और सार्वजनिक अपील पहुँचाने का माध्यम है। इसमें औपचारिक प्रारूप, स्पष्ट उद्देश्य और विनम्र भाषा रखी जाती है।
- इस पत्र में ग्रीष्मावकाश के सेवा-कार्य का संक्षिप्त कार्यक्रम देना और समान विचारधारा के युवकों को सेवादल से जुड़ने के लिए प्रेरित करना आवश्यक है।

चरण 1: पत्र का प्रारूप निर्धारित कीजिए पहले प्रेषक का पता और दिनांक लिखें। फिर संपादक का पद, समाचार-पत्र का नाम और पता दें। विषय में सेवा-कार्य तथा युवाओं की सहभागिता का उल्लेख करें। संबोधन के बाद मुख्य विवरण रखें और अंत में विनम्र निवेदन, समापन तथा प्रेषक का नाम और पद लिखें।

चरण 2: कार्यक्रम और अपील की रूपरेखा बनाइए कार्यक्रम में स्थान, अवधि और उपयोगी कार्य स्पष्ट करें। बच्चों की पढ़ाई, स्वच्छता-जागरूकता और शिक्षण-सामग्री वितरण जैसे कार्य चुने जा सकते हैं। सहभागिता का आग्रह केवल भावनात्मक न हो; इच्छुक युवाओं को संपर्क करने का स्थान और समय भी दें, जिससे वे वास्तव में समूह से जुड़ सकें। पत्र को सार्वजनिक अपील के रूप में प्रकाशित करने का अनुरोध संपादक से किया जाए।

चरण 3: पूरा आदर्श पत्र लिखिए सेवादल, 25, विकास नगर

नई दिल्ली
दिनांक: 20 मई, 2012
सेवा में,
संपादक महोदय,
नवभारत टाइम्स,
नई दिल्ली।
विषय: ग्रीष्मावकाश में सेवा-कार्य हेतु युवाओं से सहयोग की अपील।
महोदय,
आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के माध्यम से हम समान विचारधारा के युवाओं को अपने सेवादल से जुड़ने के लिए आमंत्रित करना चाहते हैं। हमारा दल ग्रीष्मावकाश में 1 जून से 30 जून तक विकास नगर के निकट स्थित गरीब बस्तियों में सेवा-कार्य करेगा।
कार्यक्रम के अंतर्गत बच्चों के लिए प्रतिदिन सायंकाल निःशुल्क पाठशाला लगाई जाएगी। उन्हें पुस्तकें और लेखन-सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी। बस्तीवासियों को स्वच्छता, सुरक्षित पेयजल और कूड़े के उचित निपटान के प्रति जागरूक किया जाएगा। स्थानीय चिकित्सकों के सहयोग से स्वास्थ्य-जाँच शिविर लगाने की भी योजना है।
सेवा में रुचि रखने वाले युवक शिक्षण, सामग्री-संग्रह तथा जागरूकता अभियान में योगदान दे सकते हैं। इच्छुक साथी 25 से 30 मई के बीच सायंकाल 5 से 6 बजे तक ऊपर दिए गए सेवादल कार्यालय में संपर्क करें। थोड़े-से सामूहिक प्रयास से अनेक परिवारों को सहायता मिल सकती है।
कृपया इस अपील को अपने समाचार-पत्र में प्रकाशित कर जनसहयोग जुटाने में सहायता करें।
धन्यवाद।
भवदीय,
अमित कुमार
संयोजक, सेवादल।

चरण 4: निष्कर्ष इस पत्र में संपादक से प्रकाशन का अनुरोध करते हुए सेवा-कार्य की अवधि, स्थान और प्रस्तावित गतिविधियाँ बताई गई हैं। युवाओं के लिए स्पष्ट संपर्क-व्यवस्था देकर समूह से जुड़ने की अपील पूरी की गई है।

त्वरित सुझाव: इस पत्र की जाँच करते समय कार्यक्रम, युवाओं से अपील और संपर्क-व्यवस्था को अलग-अलग पहचानें; तीनों का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए।

5(क)(i). निम्नलिखित के संक्षेप में उत्तर दीजिए: प्रिंट माध्यम से आप क्या समझते हैं? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रिंट माध्यम जनसंचार का मुद्रित रूप है, जिसमें सूचना लिखित शब्दों और चित्रों के द्वारा पाठकों तक पहुँचती है।
- इस माध्यम की पहचान कागज पर छपी सामग्री से होती है; समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

चरण 1: माध्यम का स्वरूप पहचानिए प्रिंट का अर्थ मुद्रित है। ऐसी सामग्री को पाठक अपनी सुविधा से पढ़ सकता है, सुरक्षित रख सकता है और आवश्यकता पड़ने पर पुनः पढ़ सकता है।

चरण 2: परिभाषा को उदाहरण से स्पष्ट कीजिए समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ और पुस्तकें छपकर पाठकों तक पहुँचते हैं। इनमें संदेश पढ़ा जाता है, इसलिए ये मुद्रित माध्यम हैं। रेडियो का श्रव्य प्रसारण इसकी श्रेणी में नहीं आता।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं और पुस्तकों जैसे छपे हुए साधनों द्वारा सूचना तथा विचारों का संचार प्रिंट या मुद्रित माध्यम कहलाता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में कागज पर छपी सामग्री का उल्लेख करें और समाचार-पत्र या पत्रिका का उदाहरण जोड़ें।

5(क)(ii). इंटरनेट पत्रकारिता की लोकप्रियता के दो कारण लिखिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इंटरनेट पत्रकारिता में समाचार इंटरनेट के माध्यम से पाठकों और दर्शकों तक पहुँचते हैं।
- इसकी लोकप्रियता को समझने के लिए समाचार मिलने की गति और उपयोगकर्ता की सहभागिता पर ध्यान दें।

चरण 1: त्वरित उपलब्धता समझिए इंटरनेट पर समाचार घटना के तुरंत बाद प्रकाशित किए जा सकते हैं और नई सूचना मिलने पर लगातार अद्यतन होते रहते हैं। पाठक को अगले मुद्रित संस्करण की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती।

चरण 2: सहभागिता का लाभ पहचानिए पाठक समाचार पर अपनी प्रतिक्रिया दे सकता है, प्रश्न पूछ सकता है और सूचना साझा कर सकता है। इस पारस्परिकता से वह केवल सूचना ग्रहण करने वाला नहीं रहता, बल्कि संवाद में भाग लेता है।

चरण 3: निष्कर्ष इंटरनेट पत्रकारिता की लोकप्रियता के दो कारण हैं: (1) समाचारों की त्वरित उपलब्धता और निरंतर अद्यतन, (2) पाठकों को तत्काल प्रतिक्रिया देने और संवाद में भाग लेने की सुविधा।

त्वरित सुझाव: दो अलग कारण लिखें: एक समाचार की गति से जुड़ा हो और दूसरा पाठक की सहभागिता से।

5(क)(iii). पत्रकारिता में 'बीट' किसे कहा जाता है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार-संगठन में संवाददाताओं के बीच समाचार-संकलन का कार्य अलग-अलग क्षेत्रों के आधार पर बाँटा जाता है।
- किसी संवाददाता को नियमित समाचार-संकलन के लिए सौंपा गया निश्चित क्षेत्र उसकी बीट कहलाता है।

चरण 1: नियमित जिम्मेदारी समझिए हर संवाददाता सभी विभागों का समाचार एक साथ नहीं जुटा सकता। इसलिए उसे किसी विषय, विभाग या क्षेत्र की घटनाओं पर नियमित नजर रखने और समाचार भेजने की जिम्मेदारी दी जाती है।

चरण 2: उदाहरण से अर्थ स्पष्ट कीजिए शिक्षा, अपराध, खेल या राजनीति किसी संवाददाता की बीट हो सकती है। शिक्षा बीट का संवाददाता विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और शिक्षा-विभाग से जुड़े समाचार नियमित रूप से संकलित करता है।

चरण 3: निष्कर्ष पत्रकारिता में समाचार-संकलन और रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता को सौंपा गया निश्चित कार्यक्षेत्र या विषय-क्षेत्र बीट कहलाता है; जैसे अपराध बीट या शिक्षा बीट।

त्वरित सुझाव: बीट की परिभाषा में निश्चित कार्यक्षेत्र और नियमित जिम्मेदारी दोनों लिखें; एक उदाहरण पर्याप्त है।

5(क)(iv). खोजी पत्रकारिता का क्या तात्पर्य है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- खोजी पत्रकारिता का लक्ष्य जनहित से जुड़े उन तथ्यों को सामने लाना है जिन्हें छिपाया जा रहा हो।
- इसके लिए पत्रकार गहन जाँच, दस्तावेजों और विश्वसनीय स्रोतों से प्रमाण जुटाकर तथ्यों की पुष्टि करता है।

चरण 1: जाँच का विषय पहचानिए भ्रष्टाचार, अनियमितता या सत्ता के दुरुपयोग जैसी बातें सामान्य समाचारों में पूरी तरह सामने नहीं आ सकतीं। खोजी पत्रकार इनके पीछे छिपे तथ्यों की व्यवस्थित पड़ताल करता है।

चरण 2: प्रमाण और पुष्टि का महत्त्व समझिए सिर्फ आरोप या अफवाह छापना खोजी पत्रकारिता नहीं है। संबंधित दस्तावेजों, स्रोतों

और अन्य साक्ष्यों से जाँच करने के बाद सत्यापित जानकारी को जनता तक पहुँचाना इसकी आवश्यक विशेषता है।

चरण 3: निष्कर्ष जनहित से जुड़े छिपाए गए तथ्यों, भ्रष्टाचार या अनियमितताओं की गहन जाँच करके प्रमाणों के साथ उन्हें उजागर करना खोजी पत्रकारिता कहलाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में छिपे तथ्य, गहन जाँच और प्रमाण के साथ खुलासा लिखें; केवल सनसनी फैलाना इसकी परिभाषा नहीं है।

5(क)(v). किन्हीं चार 24x7 हिन्दी समाचार चैनलों के नाम लिखिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 24x7 समाचार चैनल दिन के 24 घंटे और सप्ताह के सातों दिन समाचार-आधारित प्रसारण करते हैं।
- उत्तर में हिन्दी भाषा के समाचार चैनलों के नाम देने हैं; सामान्य मनोरंजन चैनलों के नाम इस माँग को पूरा नहीं करते।

चरण 1: प्रश्न की शर्तें पहचानिए चारों उदाहरण ऐसे चैनलों के होने चाहिए जिनकी पहचान हिन्दी समाचार प्रसारण से हो। किसी समाचार कार्यक्रम का नाम देने के स्थान पर पूरे समाचार चैनल का नाम लिखना आवश्यक है।

चरण 2: चार उपयुक्त नाम चुनिए आज तक, ज़ी न्यूज़, एनडीटीवी इंडिया और आईबीएन 7 हिन्दी समाचार चैनलों के उदाहरण हैं। ये प्रश्नपत्र के समय प्रचलित समाचार चैनल थे, इसलिए इनके नाम उस संदर्भ में उपयुक्त हैं।

चरण 3: निष्कर्ष चार 24x7 हिन्दी समाचार चैनल हैं: (1) आज तक, (2) ज़ी न्यूज़, (3) एनडीटीवी इंडिया और (4) आईबीएन 7।

त्वरित सुझाव: चार अलग चैनलों के पूरे नाम लिखें; किसी समाचार बुलेटिन या मनोरंजन चैनल को सूची में शामिल न करें।

5(ख). 'सूखे से तड़पता जीवन' अथवा 'आँखों देखी दुर्घटना' विषय पर एक आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में विषय का सुव्यवस्थित विवेचन होता है। उपयुक्त शीर्षक, विषय का परिचय, कारण या अनुभव, प्रभाव और सार्थक समापन इसके प्रमुख अंग हैं।
- सूखे पर आलेख में पर्यावरण और जनजीवन का संबंध स्पष्ट करें। दुर्घटना पर आलेख में प्रत्यक्षदर्शी अनुभव के साथ संवेदनशील व्यवहार और सड़क-सुरक्षा का संदेश दें।

चरण 1: दोनों विषयों की रूपरेखा बनाएँ पहले विषय में वर्षा के अभाव का दृश्य, पानी और खेती का संकट, लोगों तथा पशुओं की परेशानी और जल-संरक्षण के उपाय क्रम से आएँगे। दूसरे विषय में घटना का स्थान और परिस्थिति, टक्कर, सहायता और उससे मिली सीख रखेंगे। प्रश्न में एक विषय चुनना है; अभ्यास के लिए नीचे दोनों के स्वतंत्र आदर्श आलेख दिए गए हैं। शीर्षक के नीचे लेखक का नाम लिखकर अनुच्छेदों में विषय विकसित करें।

चरण 2: पहले विषय का आदर्श आलेख पढ़ें **सूखे से तड़पता जीवन**

लेखक: एक विद्यार्थी

फटी हुई धरती, सूने कुएँ और आकाश की ओर टकटकी लगाए किसान सूखे की पीड़ा व्यक्त करते हैं। जिन खेतों में फसलें लहरानी चाहिए थीं, वहाँ धूल उड़ रही है। सूखा केवल वर्षा का अभाव नहीं, जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं पर छाया संकट है।

पानी की कमी सबसे पहले खेती को प्रभावित करती है। बीज, खाद और मेहनत लगाने के बाद भी फसल न हो तो किसान की आय समाप्त हो जाती है। खेतिहर मज़दूरों को काम नहीं मिलता। पशुओं के लिए चारा और पानी जुटाना कठिन हो जाता है। घरों में पीने का पानी लाने के लिए लंबी दूरी तय करनी पड़ती है। कई परिवार रोज़गार की खोज में अपना गाँव छोड़ने को विवश होते हैं।

अनियमित वर्षा के साथ भूजल का अत्यधिक दोहन, तालाबों पर अतिक्रमण और पानी की बर्बादी संकट को गहरा करते हैं। राहत के लिए पेयजल, अनाज, चारा और स्थानीय रोज़गार की व्यवस्था आवश्यक है। किंतु स्थायी समाधान वर्षाजल-संग्रह, तालाबों के पुनर्जीवन, उपयुक्त फसलों और पानी बचाने वाली सिंचाई में है।

सरकार और समाज को मिलकर जलस्रोतों की रक्षा करनी होगी। पानी की हर बूँद बचाने की आदत ही धरती की प्यास और जीवन की तड़प कम कर सकती है।

चरण 3: दूसरे विषय का आदर्श आलेख पढ़ें **आँखों देखी दुर्घटना**

लेखक: एक विद्यार्थी

विद्यालय से लौटते समय मुख्य चौराहे पर हुई एक दुर्घटना ने मुझे झकझोर दिया। सड़क पर यातायात अधिक था। तभी एक तेज़ गति की मोटरसाइकिल सामने मुड़ी कार से टकरा गई। मोटरसाइकिल चालक सड़क पर गिर पड़ा और उसके हाथ से खून बहने लगा। पल भर में चारों ओर अफरा-तफरी मच गई।

कुछ लोग सहायता के लिए आगे आए, जबकि कुछ केवल खड़े होकर देखने लगे। एक दुकानदार ने एंबुलेंस बुलाई और दूसरे व्यक्ति ने यातायात रोककर घायल के आसपास सुरक्षित जगह बनाई। भीड़ में मौजूद एक प्रशिक्षित व्यक्ति ने सावधानी से प्राथमिक सहायता दी। थोड़ी देर बाद चिकित्सा दल पहुँचा और घायल को अस्पताल ले गया। पुलिस ने घटनास्थल पर उपस्थित लोगों से जानकारी ली।

इस घटना ने समझाया कि सड़क पर छोटी-सी असावधानी कितनी भारी पड़ सकती है। गति नियंत्रित रखना, संकेतों का पालन करना, मोड़ पर सावधान रहना और सुरक्षा उपकरण पहनना प्रत्येक चालक का दायित्व है। दुर्घटना होने पर भीड़ लगाने या वीडियो बनाने से अधिक आवश्यक है तुरंत सहायता बुलाना और बचावकर्मियों के लिए रास्ता खुला रखना।

उस दिन घर पहुँचने पर भी घायल का चेहरा आँखों के सामने था। सुरक्षित यात्रा केवल अपनी सावधानी से नहीं, दूसरों के जीवन के प्रति जिम्मेदारी निभाने से भी संभव होती है।

चरण 4: निष्कर्ष दोनों आदर्श आलेख अपने विषय को परिचय, विकसित अनुच्छेदों और सार्थक समापन के साथ प्रस्तुत करते हैं। परीक्षा में चुने गए एक विषय पर इसी क्रम से सुसंगत आलेख लिखें।

त्वरित सुझाव: सूखे वाले विषय में कारण, प्रभाव और उपाय जोड़ें; दुर्घटना वाले विषय में घटनाक्रम के बाद प्रत्यक्ष अनुभव से निकली सड़क-सुरक्षा की सीख लिखें।

---

6. 'शहरों की ओर भागते गाँव' अथवा 'बाल मज़दूरी का अभिशाप' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख तैयार कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी सामाजिक विषय के मानवीय पक्ष को रोचक और संवेदनशील शैली में प्रस्तुत करता है। आकर्षक शीर्षक, दृश्यात्मक आरंभ, विषय का विस्तार और विचारोत्तेजक समापन इसकी विशेषताएँ हैं।
- गाँवों से पलायन और बाल मज़दूरी को समझाते समय मनुष्य के अनुभव को केंद्र में रखें। बिना आधार के आँकड़े या किसी वास्तविक व्यक्ति के नाम से मनगढ़ंत कथन न लिखें।

चरण 1: फ़ीचर का प्रारूप और सामग्री तय करें शीर्षक और लेखक का नाम देने के बाद ऐसा दृश्य बनाएँ जो पाठक को विषय से जोड़ दे। फिर सामाजिक कारण, जीवन पर प्रभाव और सुधार की दिशा स्पष्ट करें। पहले विषय में सूने होते गाँव तथा शहर की कठिनाइयाँ आएँगी; दूसरे में श्रम में दबता बचपन, शिक्षा से दूरी और समाज का दायित्व। प्रश्न में एक विषय चुनना है; अभ्यास के लिए दोनों विषयों के पूर्ण आदर्श फ़ीचर दिए जा रहे हैं।

चरण 2: पलायन पर आदर्श फ़ीचर प्रस्तुत करें **शहरों की ओर भागते गाँव**

लेखक: एक विद्यार्थी

बस अड्डे पर एक गठरी रखी है और उसके पास खड़ा युवक बार-बार गाँव की ओर देख रहा है। शहर जाने वाली बस आने ही वाली है। पीछे खेत, घर और अपने लोग हैं; आगे काम मिलने की उम्मीद है। यह दृश्य गाँवों से शहरों की ओर बढ़ते कदमों की कहानी कहता है।

गाँव कोई चलती हुई वस्तु नहीं, फिर भी उनके खाली आँगन और सूनी गलियाँ बताती हैं कि वे मानो शहरों में समा रहे हैं। खेती से अनिश्चित आय, स्थानीय काम की कमी तथा शिक्षा और स्वास्थ्य की सीमित सुविधाएँ लोगों को बाहर जाने के लिए प्रेरित करती हैं। शहर का आकर्षण केवल चमक-दमक नहीं; कई परिवारों के लिए वह जीविका की आवश्यकता है।

लेकिन शहर पहुँचकर रास्ते आसान नहीं होते। महँगा किराया, भीड़, अनियमित काम और अपने लोगों से दूरी नए संघर्ष खड़े करते हैं। दूसरी ओर गाँव में रह गए बुज़ुर्गों का अकेलापन बढ़ता है और सामाजिक जीवन की रौनक घटती है। घर पैसे से चल सकता है, पर संबंधों को साथ और समय भी चाहिए।

समाधान लोगों की आवाजाही रोकना नहीं, गाँव में सम्मानजनक विकल्प बढ़ाना है। खेती के साथ छोटे उद्योग, स्थानीय रोज़गार, अच्छे विद्यालय, उपचार और परिवहन की सुविधाएँ विकसित हों। तब बस में बैठने वाला युवक मजबूरी से नहीं, अपनी पसंद से यात्रा करेगा; उसका गाँव भी उसके भविष्य का हिस्सा बना रहेगा।

चरण 3: बाल मज़दूरी पर आदर्श फ़ीचर प्रस्तुत करें **बाल मज़दूरी का अभिशाप**

लेखक: एक विद्यार्थी

सुबह की चाय के साथ मेज़ पर रखा गिलास चमक रहा है, लेकिन उसे साफ़ करने वाले छोटे हाथों की थकान किसे दिखाई देती है? सड़क से स्कूल जाते बच्चों को देखते ही उन आँखों में क्षण भर के लिए उत्सुकता जगती है। फिर काम की पुकार आती है और वह नज़र झुक जाती है। यही दबता हुआ बचपन बाल मज़दूरी का सबसे दुखद चेहरा है।

जिस उम्र में बच्चा पढ़े, खेले और अपने सपने पहचाने, उस उम्र में उससे लगातार काम लेना उसका विकास रोकता है। घरेलू काम, ढाबों और दुकानों में लगे बच्चे अक्सर शिक्षा से दूर हो जाते हैं। असुरक्षित वातावरण और थकान उनके शरीर तथा मन को प्रभावित करते हैं। बचपन की सीखने की स्वतंत्रता काम के बोझ में दब जाती है।

परिवार की आर्थिक परेशानी, शिक्षा तक पहुँच की कठिनाई और सस्ते श्रम की माँग इस समस्या को बढ़ाते हैं। केवल बच्चे को काम से हटाना पर्याप्त नहीं; उसके परिवार को सहायता और बच्चे को विद्यालय में टिकने का अवसर भी चाहिए। शिक्षा रुचिकर और सुलभ हो, भोजन तथा आवश्यक सुविधाएँ मिलें और परिवारों को स्थिर आजीविका के रास्ते उपलब्ध हों।

नियोक्ता और उपभोक्ता दोनों को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। बच्चों को श्रम में धकेलने वाली व्यवस्था के प्रति चुप रहना समाधान नहीं है। जब छोटे हाथों में काम का बोझ हटाकर किताब, खिलौने और अवसर दिए जाएँगे, तभी बचपन अपने सच्चे रंग में लौटेगा।

चरण 4: निष्कर्ष दोनों फ़ीचर मानवीय दृश्य से शुरू होकर सामाजिक समस्या, उसके प्रभाव और सुधार की दिशा को प्रस्तुत करते हैं। परीक्षा में चुने हुए विषय पर संवेदनशील, प्रवाहपूर्ण और विषय-केंद्रित फ़ीचर लिखें।

त्वरित सुझाव: आरंभ में सूना गाँव या काम करते बच्चे का दृश्य रखें, फिर उसके पीछे के कारण समझाएँ; केवल नारे लिखने के बजाय जीवन पर पड़ने वाला प्रभाव दिखाएँ।

7(क). निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: रुद्ध कोष है, क्षुब्ध तोष अँगना-अंग से लिपटे भी आतंक अंक पर काँप रहे हैं धनी, वज्र-गर्जन से बादल! त्रस्त नयन — मुख ढाँप रहे हैं! जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर, तुझे बुलाता कृषक अधीर, ऐ विप्लव के वीर! 'विप्लव के वीर' किसे कहा गया है और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में बादल सामाजिक क्रांति और परिवर्तन का प्रतीक है। उसका गर्जन शोषक वर्ग के लिए भय तथा पीड़ित कृषक के लिए आशा का संकेत है।
- किसी संबोधन का अर्थ स्पष्ट करते समय यह बताएँ कि वह किसके लिए प्रयुक्त हुआ है और उसकी कौन-सी विशेषता उस संबोधन को सार्थक बनाती है।

चरण 1: संबोधन के पात्र को पहचानें 'विप्लव के वीर' बादल को कहा गया है। काव्यांश में पहले 'बादल!' कहकर संबोधित किया गया है और फिर कृषक उसी को अधीर होकर बुलाता है। 'विप्लव' का अर्थ क्रांति है; अतः यह संबोधन बादल को क्रांति के साहसी अग्रदूत के रूप में प्रस्तुत करता है।

चरण 2: संबोधन का कारण स्पष्ट करें बादल के वज्र जैसे गर्जन से धनी काँप रहे हैं और अपना मुख ढाँप रहे हैं, जबकि जीर्ण बाहुओं और दुर्बल शरीर वाला किसान उसे पुकार रहा है। यह विरोध बताता है कि बादल अन्यायपूर्ण व्यवस्था को बदलने वाली शक्ति है। उसका आगमन शोषक वर्ग की सत्ता को चुनौती देता है और शोषित किसान के लिए राहत तथा नए जीवन की आशा जगाता है। इसी निर्भीक परिवर्तनकारी स्वरूप के कारण उसे वीर कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष बादल को 'विप्लव के वीर' कहा गया है, क्योंकि वह क्रांति का प्रतीक बनकर शोषकों में भय और शोषित किसानों में मुक्ति तथा नवजीवन की आशा उत्पन्न करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले 'बादल' का नाम लिखें, फिर धनी का भय और किसान की आशा जोड़कर क्रांति के प्रतीक का अर्थ स्पष्ट करें।

7(ख). शोषण से कृषक की दशा कैसी हो चली है? उसे इससे मुक्ति कैसे प्राप्त हो सकती है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में कृषक की शारीरिक दशा उसके आर्थिक शोषण का प्रत्यक्ष परिणाम है।
- बादल यहाँ विप्लव अर्थात् क्रांति का प्रतीक है; कृषक उसकी सहायता से शोषण से मुक्ति चाहता है।

चरण 1: कृषक की दशा पहचानिए शोषण के कारण कृषक की बाँहें जीर्ण और शरीर शीर्ण हो गया है। वह लगातार श्रम करता है, फिर भी अभाव और गरीबी से उसका शरीर दुर्बल तथा क्षीण हो चला है। 'जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर' उसके कष्ट और शक्ति के क्षय को व्यक्त करता है। उसका अधीर होकर बादल को पुकारना बताता है कि वह इस दशा से निकलने के लिए व्याकुल है।

चरण 2: मुक्ति का उपाय समझिए कृषक 'विप्लव के वीर' बादल को बुलाता है। बादल की गर्जना क्रांति का संकेत है, जो शोषक वर्ग की सत्ता को हिला सकती है। अतः शोषण पर आधारित व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन से ही कृषक को मुक्ति मिल सकती है। यहाँ केवल वर्षा से फसल उगने का भाव नहीं, बल्कि अन्याय और शोषण समाप्त करने की आशा भी प्रमुख है।

चरण 3: निष्कर्ष शोषण ने कृषक को दुर्बल, क्षीण और दीन बना दिया है। क्रांति द्वारा शोषक व्यवस्था के अंत से उसे मुक्ति मिल सकती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के पहले भाग को 'जीर्ण बाहु, शीर्ण शरीर' और दूसरे को 'विप्लव के वीर' से जोड़कर लिखिए।

7(ग). शोषक वर्ग के लिए प्रयुक्त विशेषणों का औचित्य समझाइए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विशेषणों का औचित्य बताते समय उनका अर्थ और वर्णित वर्ग की स्थिति से उनका संबंध स्पष्ट किया जाता है।
- धनी वर्ग के लिए प्रयुक्त 'रुद्ध कोष' और 'क्षुब्ध तोष' उसके धन-संचय तथा अस्थिर संतोष को प्रकट करते हैं।

चरण 1: रुद्ध कोष का औचित्य समझिए 'रुद्ध कोष' का आशय बंद धन-भंडार से है। शोषक वर्ग ने संपत्ति अपने अधिकार में संचित कर रखी है; उसका लाभ निर्धन कृषकों और आम लोगों तक नहीं पहुँचता। इसलिए धन का बंद कोष उसके स्वार्थपूर्ण संचय और समाज की आर्थिक विषमता का उपयुक्त संकेत है। एक ओर धनी का भरा कोष है, दूसरी ओर कृषक का क्षीण शरीर।

चरण 2: क्षुब्ध तोष का औचित्य समझिए 'क्षुब्ध तोष' का अर्थ है विचलित अथवा अशांत संतोष। धन और विलास के साधन होने पर भी धनी वर्ग निश्चिंत नहीं है। क्रांति की गर्जना उसे अपनी संपत्ति और प्रभुत्व छिनने की आशंका से व्याकुल करती है। इसीलिए उसका बाहरी सुख भीतर की घबराहट से भंग हो गया है; काँपना और मुख ढाँपना इसी भय की अभिव्यक्ति हैं।

चरण 3: निष्कर्ष 'रुद्ध कोष' धन को अपने पास बंद रखने की प्रवृत्ति और 'क्षुब्ध तोष' क्रांति के भय से भंग हुए संतोष को व्यक्त करता

है; इसलिए दोनों विशेषण सार्थक हैं।

त्वरित सुझाव: दोनों पदों का केवल शब्दार्थ न लिखें; बंद धन-भंडार को शोषण और विचलित संतोष को क्रांति के भय से जोड़ें।

7(घ). धनी कैसा जीवन जी रहे हैं? क्रांति की गर्जना का उन पर क्या प्रभाव पड़ रहा है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश धनी वर्ग के विलासी जीवन और उसके भीतर छिपे भय का विरोध दिखाता है।
- बादल का वज्र-गर्जन क्रांति का प्रतीक है, जिससे शोषक वर्ग का सुख और प्रभुत्व संकट में पड़ता है।

चरण 1: धनियों के जीवन का स्वरूप बताइए धनी संपत्ति और भोग-विलास के साधनों से संपन्न जीवन जी रहे हैं। वे सुंदरियों के अंगों से लिपटे हुए सांसारिक सुखों में डूबे हैं। किंतु यह वैभव उन्हें सच्ची निर्भयता नहीं देता। काव्यांश में विलास के चित्र के साथ आतंक का उल्लेख बताता है कि उनका आराम शोषण पर टिकी व्यवस्था की सुरक्षा पर निर्भर है।

चरण 2: क्रांति की गर्जना का प्रभाव बताइए बादल की वज्र-गर्जना सुनकर धनी आतंकित होकर काँपने लगते हैं। उन्हें अपने धन, सुख-साधनों और प्रभुत्व के नष्ट होने का भय है। इसलिए उनकी आँखों में त्रास दिखाई देता है और वे अपना मुख ढाँप रहे हैं। क्रांति की संभावना उनके विलास के बीच भी असुरक्षा भर देती है; बाहरी समृद्धि के बावजूद उनका संतोष विचलित हो जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष धनी भोग-विलास का जीवन जी रहे हैं, किंतु क्रांति की गर्जना से भयभीत होकर काँपते और मुख ढाँपते हैं।

त्वरित सुझाव: जीवन के स्वरूप के लिए 'अँगना-अंग' और प्रभाव के लिए 'काँप रहे' तथा 'मुख ढाँप रहे' के संकेत लें।

अथवा

7(क). जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना॥ अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जियावै मोही॥ जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई। नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई॥ बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं॥ भाई के बिना जीवन की तुलना किनसे की गई है? कथन का भाव स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- राम के विलाप में उपमाएँ लक्ष्मण के बिना उनके जीवन की असहायता और निरर्थकता व्यक्त करती हैं।
- प्रत्येक उपमा में किसी प्राणी से उसका अत्यंत महत्त्वपूर्ण अंग या आधार छिन जाने की स्थिति है।

चरण 1: तीनों तुलनाएँ पहचानिए राम ने भाई लक्ष्मण के बिना अपने जीवन की तुलना पंखहीन पक्षी, मणिहीन सर्प और सूँड़विहीन हाथी से की है। 'पंख बिनु खग', 'मनि बिनु फनि' और 'करिबर कर हीना' इन तीनों उपमाओं को स्पष्ट करते हैं। यहाँ हाथी का 'कर' उसकी सूँड़ है, और 'फनि' का अर्थ सर्प है।

चरण 2: कथन का भाव स्पष्ट कीजिए पंख खोकर पक्षी उड़ने की शक्ति, मणि खोकर सर्प अपनी विशिष्ट शोभा और सूँड़ खोकर हाथी अपनी प्रमुख सामर्थ्य से वंचित हो जाता है। उसी प्रकार राम को लगता है कि लक्ष्मण के बिना उनका जीवन दीन, असहाय और सारहीन हो जाएगा। यदि विधाता उन्हें जीवित भी रखे, तो ऐसा जीवन सुखद नहीं होगा। इन तुलनाओं से राम का गहरा भ्रातृप्रेम और लक्ष्मण पर उनका भावनात्मक आश्रय प्रकट होता है।

चरण 3: निष्कर्ष भाई के बिना राम का जीवन पंखहीन पक्षी, मणिहीन सर्प और सूँड़हीन हाथी जैसा असहाय होगा। कथन उनके गहन भ्रातृस्नेह और वियोग की असहनीयता को व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: तीनों उपमान अलग-अलग लिखें और 'करिबर कर' का अर्थ हाथी की सूँड़ लें; फिर सबका साझा भाव असहायता बताएँ।

7(ख). राम को अयोध्या लौटने में संकोच क्यों है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लक्ष्मण की मूर्च्छा से व्याकुल राम उनके न रहने की आशंका में अयोध्या लौटने की कल्पना करते हैं।
- 'जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई' में भ्रातृवियोग के साथ आत्मग्लानि और लोकापवाद का भय व्यक्त है।

चरण 1: संकोच का तत्काल कारण बताइए राम को आशंका है कि यदि लक्ष्मण न बच सके, तो वे उन्हें खोकर अयोध्या लौटेंगे। लक्ष्मण उनके प्रिय भाई और संकट के साथी हैं। राम सोचते हैं कि सीता को पाने के लिए हुए संघर्ष में उन्होंने अपने भाई को संकट में डाल दिया। अतः अयोध्या लौटने की कल्पना ही उन्हें अपराधबोध और लज्जा से भर देती है।

चरण 2: पद्यांश के कथन से कारण स्पष्ट कीजिए 'नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई' कहकर राम अपने मन की पीड़ा प्रकट करते हैं। उन्हें लगता है कि लोग समझेंगे कि पत्नी के लिए उन्होंने प्रिय भाई को गँवा दिया। वे अयोध्यावासियों के सामने किस मुँह से जाएँगे और इस क्षति का क्या उत्तर देंगे, यही उनका संकोच है। यह लक्ष्मण की मृत्यु की निश्चित सूचना नहीं, मूर्च्छा के समय शोकाकुल राम की आशंका है।

चरण 3: निष्कर्ष राम को संकोच है कि पत्नी को पाने के प्रयास में प्रिय भाई को खो देने पर वे अयोध्या में किस मुँह से जाएँगे। भ्रातृवियोग की आशंका और आत्मग्लानि उन्हें व्याकुल करती है।

त्वरित सुझाव: 'कवन मुहुँ लाई' को लज्जा और 'नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई' को उसके कारण के रूप में समझाकर उत्तर लिखें।

7(ग). पद्यांश के आधार पर राम की व्याकुलता के दो कारण लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- राम की व्याकुलता के कारण पद्यांश की उपमाओं और अयोध्या लौटने संबंधी कथन से स्पष्ट होते हैं।
- उत्तर में दो अलग कारण आवश्यक हैं: भाई के बिना जीवन की असहायता और उसे गँवाने की आत्मग्लानि।

चरण 1: भ्रातृवियोग की आशंका बताइए पहला कारण लक्ष्मण के न रहने की आशंका है। राम को लगता है कि भाई के बिना उनका जीवन पंखहीन पक्षी, मणिहीन सर्प और सूँड़हीन हाथी जैसा दीन तथा असहाय हो जाएगा। लक्ष्मण के प्रति उनका स्नेह इतना गहरा है कि वे उनके बिना जीवित रहने की कल्पना भी सह नहीं पाते।

चरण 2: आत्मग्लानि और संकोच बताइए दूसरा कारण यह अपराधबोध है कि पत्नी को पाने के लिए हुए संघर्ष में कहीं प्रिय भाई को न गँवा बैठें। 'जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई' में अयोध्या लौटकर लोगों का सामना करने का संकोच है। उन्हें लगता है कि ऐसा होने पर वे अपने को दोष से मुक्त नहीं मान पाएँगे; इसीलिए वे संसार का अपयश सह लेने को भाई खोने से कम दुखद समझते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष राम की व्याकुलता के दो कारण हैं: लक्ष्मण के बिना जीवन के असहाय हो जाने की आशंका और पत्नी के लिए प्रिय भाई को गँवा देने का अपराधबोध तथा अयोध्या लौटने का संकोच।

त्वरित सुझाव: पहले कारण का प्रमाण पंखहीन पक्षी वाली उपमाएँ हैं; दूसरे का प्रमाण 'नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई' है।

7(घ). 'नारि हानि बिसेष छति नाहीं।' तुलसी की उपर्युक्त मान्यता पर तर्कसम्मत टिप्पणी कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी पात्र के कथन को उसके प्रसंग और तत्कालीन मनःस्थिति में समझना चाहिए। यहाँ लक्ष्मण की मूर्च्छा से व्याकुल राम बोल रहे हैं।
- तर्कसम्मत टिप्पणी में कथन का भाव स्पष्ट करने के साथ उसकी सामाजिक मान्यता का विवेकपूर्ण मूल्यांकन किया जाता है।

चरण 1: प्रसंग में कथन का आशय समझिए राम को आशंका है कि लक्ष्मण उनके कारण प्राण खो देंगे। वे सोचते हैं कि पत्नी की हानि की अपेक्षा सहोदर भाई का खो जाना अधिक असह्य है। इसीलिए वे नारी की हानि को विशेष क्षति न होने की बात कहते हैं। कथन मुख्यतः उनके तीव्र भ्रातृप्रेम, पश्चात्ताप और शोक की अभिव्यक्ति है। इसे शांत मन से किया गया निष्पक्ष मूल्यांकन नहीं समझना चाहिए।

चरण 2: मान्यता का तर्कपूर्ण मूल्यांकन कीजिए फिर भी नारी की हानि को सामान्य बताना स्त्री के स्वतंत्र व्यक्तित्व और महत्त्व को कम करता है। इस कथन में तत्कालीन पितृसत्तात्मक समाज का दृष्टिकोण झलकता है। पत्नी जीवनसंगिनी है; उसके प्रेम, सहयोग और अस्मिता की क्षति भी अपूरणीय होती है। किसी एक संबंध की महत्ता सिद्ध करने के लिए दूसरे संबंध को हीन ठहराना उचित नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष यह उक्ति राम की शोकग्रस्त मनःस्थिति और असाधारण भ्रातृस्नेह को व्यक्त करती है, पर स्त्री-सम्मान तथा समानता की दृष्टि से इसे सार्वभौमिक सत्य नहीं माना जा सकता।

त्वरित सुझाव: टिप्पणी में पहले लक्ष्मण की मूर्च्छा का प्रसंग जोड़िए, फिर स्त्री के सम्मान और संबंधों की समान गरिमा के आधार पर अपना तर्क दीजिए।

8(क). निम्नलिखित काव्यांश पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: सवेरा हुआ ख़रगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा शरद आया पुलों को पार करते हुए अपनी नई साइकिल तेज़ चलाते हुए घंटी बजाते हुए ज़ोर-ज़ोर से। उपमा अलंकार का उदाहरण चुनकर उपमा का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा अलंकार में किसी समान गुण के आधार पर एक वस्तु की तुलना दूसरी वस्तु से की जाती है। जैसा, समान या सा जैसे शब्द तुलना को स्पष्ट कर सकते हैं।
- उपमेय वह है जिसकी तुलना होती है, उपमान वह है जिससे तुलना की जाती है और दोनों का समान गुण साधारण धर्म कहलाता है।

चरण 1: उपमा का उदाहरण और अंग पहचानिए उदाहरण है—'ख़रगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा'। यहाँ सवेरे की लालिमा की तुलना ख़रगोश की आँखों की लालिमा से हुई है। अतः सवेरा उपमेय, ख़रगोश की आँखें उपमान, लाल रंग साधारण धर्म और 'जैसा' उपमावाचक शब्द है। तुलना सीधे कही गई है, इसलिए यहाँ उपमा अलंकार है।

चरण 2: उपमा का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए ख़रगोश की आँखों के परिचित रंग के सहारे सवेरे की लालिमा पाठक की आँखों के सामने उभर आती है। सवेरा केवल समय का संकेत नहीं रह जाता, बल्कि एक स्पष्ट रंगीन दृश्य बन जाता है। छोटा, कोमल और जीवंत उपमान प्रभात के ताजे, मनोहर रूप को अनुभव करने में सहायता करता है। इससे प्रकृति का चित्रण सरल, सजीव और आकर्षक हुआ है।

चरण 3: निष्कर्ष सवेरे की तुलना ख़रगोश की लाल आँखों से करने में उपमा अलंकार है। यह तुलना प्रभात की लालिमा को मूर्त और मनोहर बनाती है।

त्वरित सुझाव: उपमा समझाते समय इसी पंक्ति में सवेरा, ख़रगोश की आँखें, लालिमा और जैसा—इन चारों की भूमिका अलग-अलग पहचानिए।

8(ख). काव्यांश की बिंब-योजना की दो विशेषताएँ बताइए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बिंब वह शब्दचित्र है जो किसी इंद्रिय से होने वाले अनुभव को पाठक के मन में सजीव कर देता है। रंग और रूप से दृश्य-बिंब तथा ध्वनि से श्रव्य-बिंब बनते हैं।
- इस काव्यांश में सवेरे की लालिमा तथा साइकिल चलाते हुए शरद की कल्पना से रंग, गति और ध्वनि का संयुक्त अनुभव मिलता है।

चरण 1: रंग और दृश्य की विशेषता बताइए पहली विशेषता रंगप्रधान दृश्यात्मकता है। 'ख़रगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा' पढ़ते ही प्रभात की लालिमा का चित्र आँखों के सामने आ जाता है। कवि ने किसी अमूर्त वर्णन के स्थान पर परिचित वस्तु से तुलना की है, इसलिए रंग का अनुभव स्पष्ट तथा सहज बनता है। पुल और नई साइकिल भी इस चित्र को ठोस रूप देते हैं।

चरण 2: गति और ध्वनि की विशेषता बताइए दूसरी विशेषता गतिशीलता के साथ श्रव्य प्रभाव है। 'पुलों को पार करते हुए' और 'साइकिल तेज़ चलाते हुए' में लगातार आगे बढ़ने की क्रिया दिखाई देती है। 'घंटी बजाते हुए ज़ोर-ज़ोर से' सुनाई पड़ने वाली ध्वनि का बिंब बनाता है। इस प्रकार चित्र स्थिर नहीं रहता; उसमें चंचल गति, उत्साह और जीवन का संचार हो जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष बिंब-योजना की दो प्रमुख विशेषताएँ रंगों से बना स्पष्ट दृश्य और गति तथा घंटी की ध्वनि से उत्पन्न सजीवता हैं।

त्वरित सुझाव: दो विशेषताएँ लिखते समय एक उदाहरण लाल सवेरे से और दूसरा तेज़ साइकिल तथा घंटी की ध्वनि से चुनिए।

8(ग). मानवीकरण अलंकार का एक उदाहरण चुनकर उसका सौंदर्य समझाइए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मानवीकरण अलंकार में प्रकृति, निर्जीव वस्तु या अमूर्त भाव को मनुष्य का रूप देकर उससे मानवीय कार्य कराए जाते हैं।
- यहाँ शरद ऋतु के आगमन को साइकिल चलाने वाले उत्साही व्यक्ति के आने के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

चरण 1: मानवीकरण का उदाहरण चुनिए उदाहरण है—'शरद आया पुलों को पार करते हुए अपनी नई साइकिल तेज़ चलाते हुए घंटी बजाते हुए ज़ोर-ज़ोर से'। शरद एक ऋतु है, पर उसे मनुष्य की तरह पुल पार करते, साइकिल चलाते और घंटी बजाते दिखाया गया है। ये कार्य ऋतु वास्तव में नहीं कर सकती; मानव-क्रियाओं का यही आरोप मानवीकरण बनाता है।

चरण 2: कल्पना का सौंदर्य समझाइए ऋतु का सामान्य आगमन इस कल्पना से उल्लासपूर्ण घटना बन गया है। नई साइकिल, तेज़ चाल और ऊँची घंटी शरद के ताजेपन, उत्साह और चंचलता को मूर्त करते हैं। पाठक को लगता है कि कोई उमंग से भरा परिचित व्यक्ति पास आ रहा है। दृश्य में गति और ध्वनि जुड़ने से प्रकृति निर्जीव पृष्ठभूमि न रहकर आत्मीय तथा जीवंत साथी बन जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष शरद का साइकिल चलाकर और घंटी बजाकर आना मानवीकरण है। इससे ऋतु का आगमन उत्साह, ताजगी और आत्मीयता से भर उठता है।

त्वरित सुझाव: मानवीकरण पहचानते समय पहले शरद को ऋतु बताइए, फिर साइकिल चलाना और घंटी बजाना जैसी मानवीय क्रियाएँ स्पष्ट कीजिए।

अथवा

8(क). मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ, जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते — मैं अपने मन का गान किया करता हूँ। काव्यांश से अनुप्रास अलंकार के दो उदाहरण चुनकर लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुप्रास अलंकार में एक ही व्यंजन की आवृत्ति से भाषा में नाद-सौंदर्य उत्पन्न होता है। पहचान केवल अर्थ से नहीं, दोहराई गई ध्वनि से की जाती है।
- दिए हुए काव्यांश से उदाहरण चुनते समय मूल शब्दों को यथावत् लिखना और उनमें आवृत्त व्यंजन बताना आवश्यक है।

चरण 1: पहला उदाहरण पहचानिए पहला उदाहरण 'स्नेह-सुरा' है। 'स्नेह' और 'सुरा' दोनों शब्दों के आरंभ में 'स' व्यंजन आया है। इसी व्यंजन की आवृत्ति से उच्चारण में लय और मधुरता आती है। यहाँ स्नेह तथा सुरा के अर्थ-संबंध से रूपक भी बनता है, पर अनुप्रास का आधार केवल 'स' ध्वनि की पुनरावृत्ति है। एक ही पद में अलग-अलग आधारों पर दोनों अलंकार हो सकते हैं।

चरण 2: दूसरा उदाहरण पहचानिए दूसरा उदाहरण 'जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते' है। इसमें 'जग', 'जो' और फिर 'जग' में 'ज' व्यंजन की आवृत्ति है। यह आवृत्ति कथन को नादात्मक और प्रवाहपूर्ण बनाती है। उदाहरण लिखते हुए केवल पूरे शब्द 'जग' का दोहराव बताने के बजाय 'जो' सहित आवृत्त व्यंजन को स्पष्ट करना चाहिए; इसी से अनुप्रास की पहचान पुष्ट होती है।

चरण 3: निष्कर्ष अनुप्रास के दो उदाहरण हैं—'स्नेह-सुरा' में 'स' की आवृत्ति तथा 'जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते' में 'ज' की आवृत्ति।

त्वरित सुझाव: हर उदाहरण के बाद दोहराया गया व्यंजन लिखिए; स्नेह-सुरा के लिए स और जग-जो-जग के लिए ज बताइए।

8(ख). रूपक अलंकार का उदाहरण चुनकर उसका सौंदर्य समझाइए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रूपक अलंकार में उपमेय और उपमान का भेद मिटाकर एक को दूसरा ही मान लिया जाता है। इसमें जैसा या समान कहकर केवल तुलना नहीं की जाती।
- कवि प्रेम को अपने जीवन की शक्ति और मस्ती का स्रोत मानता है। दिए हुए पद में इसी भाव को सुरा के माध्यम से मूर्त किया गया है।

चरण 1: रूपक का उदाहरण और आधार पहचानिए उदाहरण है—'मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ'। इसमें स्नेह उपमेय और सुरा उपमान है। कवि ने स्नेह को सुरा जैसा कहने के बजाय स्नेह को ही सुरा मान लिया है। स्नेह पर सुरा का यह अभेद आरोप रूपक अलंकार बनाता है। 'पान' का प्रयोग भी इस आरोप को पूरा करता है, क्योंकि प्रेम के अनुभव को पीने के अनुभव के रूप में कहा गया है।

चरण 2: भाव और काव्य-सौंदर्य समझाइए जिस प्रकार सुरा मनुष्य को मस्ती में डुबो देती है, उसी प्रकार प्रेम कवि को आनंद और आत्मतृप्ति से भर देता है। वह प्रेम की इसी मस्ती में अपने मन का गान करता है तथा संसार की स्वीकृति की चिंता नहीं करता। अमूर्त स्नेह को पीने योग्य पदार्थ के रूप में प्रस्तुत करने से प्रेम की गहराई और उसका प्रभाव सजीव हो जाता है। यहाँ मुख्य आशय प्रेमानुभूति है।

चरण 3: निष्कर्ष 'स्नेह-सुरा' में स्नेह पर सुरा का आरोप होने से रूपक अलंकार है। इससे कवि की प्रेममय मस्ती, आत्मतृप्ति और स्वतंत्र भाव-जगत का प्रभावपूर्ण चित्र बनता है।

त्वरित सुझाव: रूपक समझाते समय स्नेह को उपमेय और सुरा को उपमान बताकर स्पष्ट कीजिए कि प्रेम को ही मदिरा मान लिया गया है।

8(ग). काव्यांश की भाषा पर टिप्पणी कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यभाषा की टिप्पणी में भाषा का रूप, शब्द-चयन और भावों को व्यक्त करने की क्षमता स्पष्ट की जाती है।
- लय, आवृत्ति और अलंकार भाषा को प्रभावशाली बनाते हैं; उनकी विशेषता काव्यांश के उदाहरण से बतानी चाहिए।

चरण 1: भाषा और शब्दावली पहचानें प्रस्तुत काव्यांश की भाषा सरल, सहज और प्रवाहपूर्ण खड़ीबोली हिंदी है। 'स्नेह', 'सुरा', 'ध्यान' तथा 'गान' जैसे तत्सम शब्दों के साथ 'जग', 'पूछ' और 'गाते' जैसे व्यवहार में आने वाले शब्द प्रयुक्त हुए हैं। इस मेल से भाषा साहित्यिक होते हुए भी बोधगम्य बनी रहती है। कवि ने अपने मन की अनुभूति को सीधे आत्मकथन के रूप में व्यक्त किया है।

चरण 2: लय और अभिव्यक्ति का प्रभाव समझें 'मैं' और 'करता हूँ' की आवृत्ति से आत्माभिव्यक्ति का स्वर उभरता है तथा गीतात्मक लय बनती है। 'स्नेह-सुरा' का रूपक प्रेम की मादकता को मूर्त करता है। 'जग' की आवृत्ति और 'ध्यान' तथा 'गान' का ध्वनि-साम्य कथन को स्मरणीय बनाते हैं। अपनी ही अनुभूति का गान करने की बात सरल शब्दों में कवि की स्वतंत्र मनोवृत्ति व्यक्त करती है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश की भाषा सरल खड़ीबोली, भावपूर्ण, लयात्मक और अलंकार-संपन्न है। सहज शब्दावली तथा आत्मकथन-शैली कवि की प्रेममय, स्वतंत्र अनुभूति को प्रभावी ढंग से व्यक्त करती है।

त्वरित सुझाव: भाषा पर टिप्पणी करते समय 'सरल खड़ीबोली' के साथ 'स्नेह-सुरा' और 'करता हूँ' जैसे पाठगत उदाहरण देकर प्रभाव भी लिखें।

9(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: सोदाहरण सिद्ध कीजिए कि 'उषा' कविता गाँव की सुबह का गतिशील चित्र है। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शमशेर बहादुर सिंह की 'उषा' कविता में सूर्योदय से पहले आकाश के रंगों और रूपों में होने वाला परिवर्तन चित्रित है।
- ग्रामीण घरेलू जीवन के परिचित उपमान दृश्य को आत्मीय बनाते हैं; बदलते बिंब सुबह की गतिशीलता व्यक्त करते हैं।

चरण 1: ग्रामीण जीवन के बिंब पहचानें कवि प्रातःकालीन आकाश को नीले शंख जैसा और भोर के नभ को राख से लीपे हुए गीले चौके जैसा देखता है। राख से लीपा चौका गाँव के घरेलू जीवन से जुड़ा बिंब है। इसके बाद आकाश के कालेपन में उभरती लालिमा काली सिल पर थोड़े से लाल केसर के धुल जाने जैसी दिखाई देती है। चौका, राख और सिल जैसे साधारण घरेलू उपकरण प्रकृति के वर्णन को ग्रामीण परिवेश से जोड़ते हैं। ये उपमान केवल रंग नहीं बताते, बल्कि गाँव के प्रातःकाल का सहज वातावरण भी उपस्थित करते हैं।

चरण 2: बदलते रंगों से गतिशीलता स्पष्ट करें कविता में सुबह का कोई एक स्थिर दृश्य नहीं है। पहले नीला और गहरा आकाश दिखता है; फिर उसमें केसर जैसी लालिमा उभरती है। आगे यह लालिमा स्लेट पर लाल खड़िया चाक मल दिए जाने जैसी लगती है। प्रकाश बढ़ने पर नीले जल में किसी गोरी देह के झिलमिलाने जैसा उज्ज्वल बिंब बनता है। इस तरह अँधेरे से लालिमा और फिर उजाले की ओर बढ़ता परिवर्तन समय के बीतने का अनुभव कराता है।

चरण 3: सूर्योदय से चित्र को पूर्ण करें अंत में सूर्योदय होते ही उषा का जादू टूट जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि पहले के सारे रंग और आकार क्षण-क्षण बदलती भोर की अवस्थाएँ थे। कविता का दृश्य क्रमशः विकसित होता है और सूर्य के उदय के साथ पूरा होता है।

चरण 4: निष्कर्ष 'उषा' गाँव की सुबह का गतिशील चित्र है, क्योंकि ग्रामीण जीवन के चौके और सिल जैसे बिंबों के माध्यम से आकाश के बदलते रंग, बढ़ता प्रकाश और अंततः सूर्योदय का क्रम सजीव हो उठता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में चौका और सिल से ग्रामीणता सिद्ध करें तथा नीले आकाश से लालिमा और सूर्योदय तक के परिवर्तन से गतिशीलता समझाएँ।

9(ख). भाव स्पष्ट कीजिए: कविता एक खिलना है फूलों के बहाने कविता का खिलना फूल क्या जाने। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की 'कविता के बहाने' में कविता की असीम सृजनशीलता और उसके व्यापक प्रभाव को व्यक्त किया गया है।
- फूल का खिलना कविता के भाव-सौंदर्य के प्रस्फुटन का बिंब है; दोनों की समानता के बाद उनकी सीमा का अंतर स्पष्ट होता है।

चरण 1: खिलने की समानता समझें जैसे फूल खिलकर रंग और सुगंध से आसपास के वातावरण को आनंदित करता है, वैसे ही कविता शब्दों में भावों, कल्पना और सौंदर्य का विस्तार करती है। कविता पढ़ने से पाठक के मन में नई संवेदनाएँ और विचार जागते हैं। इसलिए कवि ने कविता को फूलों के बहाने खिलना कहा है। यहाँ खिलने का अर्थ केवल किसी वस्तु का खुलना नहीं, बल्कि भाव-जगत का विकसित होना और अपने सौंदर्य से दूसरों को प्रभावित करना है।

चरण 2: फूल और कविता की सीमाओं का अंतर बताएँ फूल का जीवन सीमित है; कुछ समय बाद वह मुरझा जाता है और उसकी सुगंध भी एक सीमित क्षेत्र तक पहुँचती है। कविता का प्रभाव इन भौतिक सीमाओं से आगे जा सकता है। उसके भाव विभिन्न स्थानों और समयों के पाठकों तक पहुँचते हैं तथा नए अनुभवों में नए अर्थ ग्रहण करते हैं। एक कविता अपने रचनाकाल के बहुत बाद भी मनुष्य की संवेदना को समृद्ध कर सकती है। इसलिए फूल कविता के इस व्यापक और दीर्घजीवी खिलने को नहीं जान सकता।

चरण 3: कथन का केंद्रीय भाव जोड़ें 'फूल क्या जाने' के माध्यम से कविता के सौंदर्य को फूल के सौंदर्य से अधिक व्यापक बताया गया है। फूल कविता को समझाने का माध्यम है, किंतु कविता की कल्पना और संवेदना उसी उपमान तक सीमित नहीं रहती। वह पाठक के भीतर भी भावों और अर्थों का नया संसार विकसित करती है।

चरण 4: निष्कर्ष पंक्तियों का भाव है कि कविता फूल की तरह सौंदर्य और आनंद फैलाती है, किंतु उसकी सृजनशीलता तथा प्रभाव फूल के सीमित जीवन और विस्तार से कहीं आगे जाते हैं। कविता का यह असीम खिलना फूल नहीं जान सकता।

त्वरित सुझाव: भावार्थ में पहले फूल और कविता के सौंदर्य की समानता लिखें, फिर फूल की सीमित आयु तथा कविता के व्यापक, दीर्घजीवी प्रभाव का अंतर बताएँ।

9(ग). 'कैमरे में बंद अपाहिज़' कविता में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता करुणा के प्रदर्शन के पीछे छिपी अमानवीयता पर व्यंग्य करती है।
- कार्यक्रम के घोषित सामाजिक उद्देश्य और संचालक के वास्तविक व्यवहार का विरोधाभास कविता के व्यंग्य का आधार है।

चरण 1: सामाजिक उद्देश्य और व्यवहार का अंतर देखें दूरदर्शन का संचालक कार्यक्रम को सामाजिक उद्देश्य से जुड़ा बताता है, पर उसका ध्यान अपाहिज व्यक्ति की सहायता या उसके अनुभवों को सम्मान से समझने पर नहीं है। वह उससे ऐसे प्रश्न पूछता है जिनसे उसे अपनी शारीरिक असमर्थता और दुख का बार-बार अनुभव हो। कार्यक्रम बनाने वालों की समर्थ स्थिति और सामने बैठे व्यक्ति की विवशता का अंतर बताता है कि संवाद बराबरी और संवेदना पर आधारित नहीं है।

चरण 2: पीड़ा को प्रदर्शन बनाने की प्रवृत्ति समझें संचालक चाहता है कि अपाहिज व्यक्ति कैमरे के सामने रो पड़े, ताकि उसके आँसू दर्शकों तक पहुँचाकर उन्हें भी भावुक किया जा सके। कैमरे पर उसकी तकलीफ और आँखों को उभारने की कोशिश वास्तविक संवेदना को प्रदर्शन में बदल देती है। मनुष्य का निजी दुख कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाने का साधन बन जाता है। उसके मन की गरिमा से अधिक महत्त्व उस दृश्य को मिलता है जो दर्शकों पर असर डाल सके।

चरण 3: दर्शकों और संचार-माध्यम की संवेदनहीनता पहचानें कविता दर्शकों की उस क्षणिक भावुकता पर भी प्रश्न उठाती है जिसमें दूसरे का दुख देखकर रो लेना ही सामाजिक कर्तव्य समझ लिया जाता है। संचालक के लिए कार्यक्रम का समय और उसकी सफलता अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। अंत का औपचारिक धन्यवाद इस विरोधाभास को और तीखा करता है: पीड़ित की स्थिति वैसी ही रहती है, जबकि

उसका दुख सफल प्रसारण का हिस्सा बन चुका होता है।

चरण 4: निष्कर्ष कविता में सामाजिक सेवा और करुणा का दावा करने वाले संचार-माध्यमों की संवेदनहीनता पर व्यंग्य है। वे अपाहिज व्यक्ति की पीड़ा को तमाशा तथा दर्शकों की भावुकता को कार्यक्रम की सफलता का साधन बना देते हैं।

त्वरित सुझाव: व्यंग्य समझाते समय घोषित सामाजिक उद्देश्य, रोने के लिए दबाव और कैमरे द्वारा दुख के प्रदर्शन को जोड़ें; केवल कार्यक्रम का सार न लिखें।

10(क). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: वायदा करके झुठलाने के क्या माने? जान देकर भी वायदा पूरा करना होगा। मगर कैसे? अच्छा, अगर इसे कीनुओं की टोकरी में सबसे नीचे रख लिया जाए तो इतने कीनुओं के ढेर में इसे कौन देखेगा? और अगर देख लिया? नहीं जी, फलों की टोकरियाँ तो आते वक्त भी किसी की नहीं देखी जा रही थीं। पाठ और उसके रचनाकार का नामोल्लेख करते हुए बताइए कि उक्त चिंतन किसका है। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश की पहचान करते समय पाठ, रचनाकार और चिंतन करने वाले पात्र का नाम अलग-अलग स्पष्ट करना चाहिए।
- वायदा निभाने की चिंता और कीनुओं की टोकरी में नमक रखने का विचार 'नमक' कहानी के प्रसंग की पहचान कराते हैं।

चरण 1: पाठ तथा रचनाकार की पहचान करें प्रस्तुत गद्यांश 'नमक' पाठ से लिया गया है। इसकी रचनाकार रज़िया सज्जाद ज़हीर हैं। कहानी में राजनीतिक सीमाओं के पार बने रहने वाले आत्मीय संबंध और अपने जन्मस्थान के प्रति मनुष्य का लगाव उभरता है। यहाँ वायदे को निभाने की चिंता उसी मानवीय संबंध से जुड़ी है।

चरण 2: चिंतन करने वाले पात्र को प्रसंग से जोड़ें उक्त चिंतन सफ़िया का है। उसने सिख बीबी के लिए लाहौर से नमक लाने का वायदा किया था। नमक भारत ले जाने में कस्टम की रोक का पता चलने पर वह सोचती है कि अपना वचन कैसे पूरा करे। कीनुओं की टोकरी में नमक नीचे रखने तथा उसके पकड़े जाने की आशंका से उसके मन का द्वंद्व प्रकट होता है। 'जान देकर भी वायदा पूरा करना होगा' उसका वचन निभाने का दृढ़ संकल्प व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष पाठ का नाम 'नमक', रचनाकार का नाम रज़िया सज्जाद ज़हीर और उक्त चिंतन करने वाली पात्र का नाम सफ़िया है।

त्वरित सुझाव: इस प्रश्न में तीन पहचानें सीधे लिखें: 'नमक', रज़िया सज्जाद ज़हीर और सफ़िया; फिर नमक लाने के वायदे का संक्षिप्त संदर्भ दें।

10(ख). ऐसा क्या वायदा है जिसे पूरा करने के लिए जान भी दी जा सकती है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रज़िया सज्जाद ज़हीर की कहानी 'नमक' में नमक जन्मभूमि की स्मृति और आत्मीय संबंध का प्रतीक है।
- सफ़िया का वायदा समझने के लिए सिख बीबी की लाहौर से जुड़ी भावना तथा सीमा-पार नमक लाने की समस्या को जोड़ना चाहिए।

चरण 1: वायदे का प्रसंग पहचानिए सिख बीबी का जीवन भारत में बीत रहा है, किंतु लाहौर की स्मृति उनके मन में गहराई से बसी हुई है। उन्होंने पाकिस्तान जाने वाली सफ़िया से लाहौरी नमक लाने को कहा था। सफ़िया ने उनकी इस इच्छा को पूरा करने का वचन दिया था। यह किसी महँगी वस्तु की माँग नहीं, जन्मभूमि से जुड़ी आत्मीय निशानी पाने की इच्छा थी।

चरण 2: वचन निभाने की दृढ़ता समझिए अब पाकिस्तान से भारत लौटते समय नमक ले जाने पर सीमा-संबंधी रोक समस्या बनती है। फिर भी सफ़िया वचन से पीछे नहीं हटना चाहती। 'जान देकर भी' वायदा पूरा करने की बात उसकी इसी दृढ़ता को व्यक्त करती है। वह सिख बीबी की भावना और अपने दिए हुए वचन को साधारण सुविधा से अधिक महत्त्व देती है।

चरण 3: निष्कर्ष सफ़िया ने सिख बीबी से पाकिस्तान से लाहौरी नमक लाकर देने का वायदा किया था। उसी आत्मीय वचन को पूरा

करने के लिए वह जान तक देने को तैयार है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में वायदा करने वाली सफ़िया, सिख बीबी और लाहौरी नमक का स्पष्ट उल्लेख करें; केवल 'वचन निभाना' लिखकर न रुकें।

10(ग). समस्या का समाधान क्या सोचा गया? क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में समस्या लाहौरी नमक को सीमा पार भारत ले जाने की है; समाधान सफ़िया की तत्काल योजना से समझना है।
- 'किनुओं की टोकरी' और 'फलों की टोकरियाँ' संबंधी वाक्य योजना तथा उसके कारण, दोनों के प्रमाण हैं।

चरण 1: सोचा गया उपाय स्पष्ट कीजिए सफ़िया ने सोचा कि नमक की पुड़िया किनुओं की टोकरी में सबसे नीचे रख दी जाए। ऊपर बहुत-से किनू होने से नमक दिखाई नहीं देगा और वह उसे भारत ले जा सकेगी। यह उस समय उसके मन में आया उपाय था, क्योंकि सिख बीबी से किए वायदे को पूरा करना उसके लिए अत्यंत आवश्यक था।

चरण 2: उपाय के पीछे का कारण बताइए सफ़िया को अनुभव था कि आते समय फलों की टोकरियों की तलाशी नहीं ली गई थी। इसलिए उसे आशा थी कि लौटते समय भी टोकरी नहीं देखी जाएगी। उसके मन में यह संदेह भी उठता है कि यदि जाँच हुई तो क्या होगा, लेकिन पिछले अनुभव के आधार पर वह पुड़िया को फलों के नीचे रखने की संभावना पर विचार करती है।

चरण 3: निष्कर्ष नमक को किनुओं की टोकरी के तल में छिपाकर ले जाने का उपाय सोचा गया, क्योंकि पहले आते समय फलों की टोकरियों की जाँच नहीं हुई थी।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के 'क्या' का उत्तर टोकरी में नमक रखने से और 'क्यों' का उत्तर पिछली यात्रा में तलाशी न होने से दें।

10(घ). आपके विचार से ऐसी समस्याओं का राजनैतिक हल क्या हो सकता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी राजनीतिक सीमाओं और मनुष्य के आत्मीय संबंधों के बीच उत्पन्न तनाव को सामने लाती है।
- मत-आधारित उत्तर में ऐसी व्यावहारिक नीति सुझानी चाहिए जो दोनों देशों की सुरक्षा के साथ सामान्य नागरिकों की भावनाओं का भी सम्मान करे।

चरण 1: समस्या का मानवीय पक्ष पहचानिए सिख बीबी के लिए लाहौरी नमक केवल खाने की वस्तु नहीं, अपने पुराने घर और जन्मभूमि की याद है। राजनीतिक विभाजन के कारण ऐसी छोटी और आत्मीय वस्तु को ले जाना भी कठिन हो जाता है। इसलिए समाधान में नागरिकों की स्मृतियों, पारिवारिक संबंधों और आपसी सद्भाव को महत्त्व मिलना चाहिए।

चरण 2: नीति में आवश्यक सुधार सुझाइए मेरे विचार से भारत और पाकिस्तान की सरकारों को बातचीत द्वारा आपसी विश्वास बढ़ाना चाहिए। व्यक्तिगत उपयोग की साधारण, अहानिकर वस्तुओं को सीमित मात्रा में लाने-ले जाने के नियम सरल और स्पष्ट किए जा सकते हैं। लोगों की यात्राओं तथा सांस्कृतिक संपर्क को भी सुगम बनाया जाए। सुरक्षा-जाँच बनी रहे, लेकिन सामान्य मानवीय संबंधों पर अनावश्यक प्रतिबंध न लगाए जाएँ।

चरण 3: निष्कर्ष ऐसी समस्याओं का राजनीतिक हल दोनों देशों के बीच संवाद, मैत्रीपूर्ण संबंध और मानवीय दृष्टि से बनाए गए सरल आवागमन तथा सीमा-शुल्क नियम हो सकते हैं।

त्वरित सुझाव: अपने सुझाव को नमक जैसी भावनात्मक वस्तु के उदाहरण से जोड़ें और सुरक्षा तथा मानवीय सुविधा, दोनों का ध्यान रखें।

अथवा

10(क). जैसे मेरे नाम की दुर्वहता मेरे लिए दुर्वह है, वैसे ही लक्ष्मी की समृद्धि भक्तिन के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी। वैसे तो जीवन में सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है; पर भक्तिन बड़ी समझदार है, क्योंकि वह अपना समृद्धिसूचक नाम किसी को बताती नहीं, केवल जब नौकरी की खोज में आई थी, तब ईमानदारी का परिचय देने के लिए अपने शेष इतिवृत्त के साथ इसे भी बता दिया, पर इस प्रार्थना के साथ कि मैं कभी नाम का प्रयोग न करूं। रचना और रचनाकार का नामोल्लेख करते हुए बताइए कि यह कथन किसके बारे में है। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रस्तुत अंश महादेवी वर्मा के संस्मरणात्मक रेखाचित्र 'भक्तिन' से लिया गया है।
- अंश में नाम के अर्थ और वास्तविक जीवन के विरोधाभास द्वारा भक्तिन की स्थिति तथा उसकी व्यावहारिक समझ उभरती है।

चरण 1: रचना और रचनाकार पहचानिए इस गद्यांश की रचना का नाम 'भक्तिन' है और इसकी लेखिका महादेवी वर्मा हैं। लेखिका अपने साथ रहने वाली सेविका के जीवन, स्वभाव और व्यवहार का चित्र प्रस्तुत करती हैं। अंश में उसका परिचय केवल एक नाम के माध्यम से नहीं, बल्कि उस नाम और जीवन की परिस्थितियों के अंतर से दिया गया है।

चरण 2: कथन का पात्र स्पष्ट कीजिए यह कथन भक्तिन के बारे में है। उसका वास्तविक नाम लछमिन है, जो लक्ष्मी का लोकप्रचलित रूप है और समृद्धि का बोध कराता है। किंतु उसका जीवन अभावों तथा संघर्षों से भरा है। इसलिए वह अपने नाम को उजागर नहीं करना चाहती। नौकरी के लिए आते समय उसने ईमानदारी से अपना परिचय दिया, पर लेखिका से उसका वास्तविक नाम प्रयोग न करने की प्रार्थना भी की।

चरण 3: निष्कर्ष रचना 'भक्तिन', रचनाकार महादेवी वर्मा और कथन का पात्र भक्तिन है, जिसका वास्तविक नाम लछमिन है।

त्वरित सुझाव: इस प्रश्न में तीन सूचनाएँ अलग पहचानें: रचना का नाम, लेखिका का नाम और जिस पात्र के बारे में कथन है उसका नाम।

10(ख). लेखिका के नाम में ऐसा क्या है जिसकी विशालता उन्हें दुर्वह लगती है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'दुर्वह' का अर्थ है ऐसा भार जिसे वहन करना कठिन हो; यहाँ यह शब्द नाम से जुड़ी महानता के लिए प्रयुक्त है।
- महादेवी वर्मा अपने नाम के अर्थ और साधारण मानवीय अस्तित्व के बीच अंतर को विनोद तथा आत्मपरिहास से व्यक्त करती हैं।

चरण 1: लेखिका के नाम का अर्थ खोलिए लेखिका का नाम महादेवी है। इसमें 'महा' से महानता और 'देवी' से दिव्य गुणों से संपन्न देवी का बोध होता है। इस प्रकार नाम अपने साथ बहुत ऊँची गरिमा, श्रेष्ठता और महान गुणों की अपेक्षा लिए हुए है। लेखिका इसी अर्थगत विशालता की ओर संकेत करती हैं।

चरण 2: विशालता को दुर्वह कहने का कारण समझिए मनुष्य सीमाओं और कमजोरियों से युक्त होता है। अपने नाम में निहित महान देवी जैसी पूर्णता और उच्चता का भार अपने ऊपर अनुभव करना लेखिका को कठिन लगता है। वह विनम्र आत्मपरिहास में कहती हैं कि नाम की इतनी बड़ी महिमा को निभाना उनके लिए दुर्वह है। यह कथन आगे भक्तिन के समृद्धिसूचक नाम और उसके अभावपूर्ण जीवन के विरोधाभास से जुड़ता है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखिका के नाम 'महादेवी' में महान देवी की गरिमा और दिव्यता निहित है। इतनी महानता की अपेक्षा का भार उन्हें अपनी मानवीय सीमाओं के कारण दुर्वह लगता है।

त्वरित सुझाव: 'दुर्वह' को नाम की लंबाई न समझें; उसे 'महादेवी' के अर्थ से जुड़ी महानता और अपेक्षाओं के भार से जोड़ें।

10(ग). भक्तिन को समझदार क्यों कहा गया है? वह अपना नाम क्यों छिपाती है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भक्तिन का समृद्धिसूचक वास्तविक नाम उसके अभावपूर्ण जीवन से मेल नहीं खाता।
- लेखिका की दृष्टि में अपनी परिस्थिति और नाम का विरोधाभास समझकर उसका व्यवहार करना भक्तिन की व्यावहारिक बुद्धि का परिचायक है।

चरण 1: समझदारी का आधार बताइए लेखिका कहती हैं कि लोगों को प्राय: अपने नाम और जीवन के विरोधाभास के साथ जीना पड़ता है। भक्तिन इस विरोधाभास को समझती है और अपना समृद्धि का बोध कराने वाला नाम किसी को नहीं बताती। वह जानती है कि केवल नाम से जीवन में धन या सुख नहीं आ जाता। उसका यह व्यावहारिक बोध उसे समझदार बनाता है।

चरण 2: नाम छिपाने का कारण स्पष्ट कीजिए भक्तिन का असली नाम लछमिन है, जो लक्ष्मी से जुड़ा है, जबकि उसका जीवन गरीबी और कठिनाइयों में बीता है। नाम की समृद्धि और जीवन के अभाव का अंतर उजागर न हो, इसलिए वह अपना नाम छिपाती है। नौकरी की खोज में आने पर उसने ईमानदारी से लेखिका को यह नाम बताया, किंतु साथ ही उसे प्रयोग न करने की प्रार्थना की।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन अपने नाम और वास्तविक जीवन के विरोधाभास को पहचानती है, इसलिए समझदार कही गई है। वह अभावपूर्ण जीवन से मेल न खाने वाला समृद्धिसूचक नाम लछमिन छिपाती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दोनों माँगें पूरी करें: विरोधाभास पहचानना उसकी समझदारी है और नाम तथा जीवन का मेल न होना नाम छिपाने का कारण है।

10(घ). आशय स्पष्ट कीजिए: 'लक्ष्मी की समृद्धि भक्तिन के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी।' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महादेवी वर्मा के संस्मरण 'भक्तिन' में लक्ष्मी नाम और भक्तिन के अभावपूर्ण जीवन के बीच विरोधाभास दिखाया गया है।
- 'लक्ष्मी' धन-समृद्धि की प्रतीक हैं, जबकि 'कपाल की कुंचित रेखाएँ' यहाँ भक्तिन के कठिन भाग्य का संकेत हैं।

चरण 1: नाम में निहित अर्थ समझिए भक्तिन का वास्तविक नाम लछमिन अर्थात लक्ष्मी था। लक्ष्मी शब्द से धन, सुख और समृद्धि का बोध होता है। इस नाम के आधार पर उसके जीवन में संपन्नता होने की कल्पना की जा सकती है, किंतु उसका वास्तविक जीवन नाम के इस अर्थ से मेल नहीं खाता था। लेखिका इसी अंतर की ओर ध्यान दिलाती हैं।

चरण 2: जीवन की परिस्थितियों से आशय जोड़िए भक्तिन को जीवन में पारिवारिक उपेक्षा, पति की मृत्यु, आर्थिक कठिनाइयों और संघर्षों का सामना करना पड़ा। नाम लक्ष्मी होने पर भी उसके भाग्य में स्थायी सुख-समृद्धि नहीं रही। इसलिए लेखिका कहती हैं कि लक्ष्मी की समृद्धि उसके माथे की टेढ़ी-मेढ़ी भाग्यरेखाओं में बँध नहीं सकी। यह कथन नाम से समृद्धि मिल जाने की धारणा पर विनोदपूर्ण टिप्पणी भी है और भक्तिन की दयनीय आर्थिक स्थिति का मार्मिक संकेत भी।

चरण 3: निष्कर्ष आशय यह है कि भक्तिन का नाम तो धन-समृद्धि की देवी लक्ष्मी के नाम पर था, पर उसका जीवन अभावों और संघर्षों में बीता। नाम और वास्तविक जीवन में स्पष्ट विरोध था।

त्वरित सुझाव: आशय लिखते समय 'लक्ष्मी' को समृद्धि और 'कपाल की रेखाओं' को भाग्य से जोड़कर नाम तथा जीवन का विरोध स्पष्ट कीजिए।

11(क). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए: जाति-प्रथा को श्रम-विभाजन का ही एक अंग मानने के पीछे डॉ. भीमराव आंबेडकर ने क्या तर्क दिए हैं? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डॉ. भीमराव आंबेडकर जाति-प्रथा के समर्थकों के तर्क प्रस्तुत करके उनका खंडन करते हैं; उन तर्कों को लेखक का समर्थन नहीं समझना चाहिए।
- उपयोगी श्रम-विभाजन व्यक्ति की रुचि और योग्यता पर आधारित होता है, जबकि जाति-प्रथा जन्म के आधार पर पेशे और सामाजिक स्तर तय करती है।

चरण 1: जाति-प्रथा के समर्थकों का तर्क पहचानिए आंबेडकर बताते हैं कि जाति-प्रथा के कुछ समर्थक इसे श्रम-विभाजन का एक रूप कहते हैं। उनका तर्क है कि आधुनिक सभ्य समाज में कार्यों का बँटवारा आवश्यक है और जाति-प्रथा भी अलग-अलग जातियों को अलग-अलग काम सौंपती है। इसलिए वे इसे समाज के संचालन के लिए उपयोगी मानकर इसका बचाव करते हैं। पाठ में यह मत समर्थकों का है, स्वयं आंबेडकर का निष्कर्ष नहीं।

चरण 2: लेखक द्वारा किया गया भेद स्पष्ट कीजिए आंबेडकर का प्रतितर्क है कि जाति-प्रथा केवल श्रम का विभाजन नहीं, श्रमिकों का भी ऊँच-नीच पर आधारित विभाजन करती है। यह मनुष्य की क्षमता, प्रशिक्षण अथवा रुचि देखकर काम नहीं सौंपती; जन्म और वंश के अनुसार उसका पेशा पहले से निश्चित कर देती है। इस प्रकार व्यक्ति की स्वतंत्रता और प्रतिभा बाधित होती है।

चरण 3: व्यवस्था की व्यावहारिक हानि बताइए बदलती परिस्थितियों में व्यक्ति को अपना व्यवसाय बदलने की स्वतंत्रता चाहिए। जाति-प्रथा यह स्वतंत्रता रोकती है, जिससे बेरोजगारी बढ़ सकती है। जब काम व्यक्तिगत रुचि से मेल नहीं खाता और कुछ पेशों को हीन समझा जाता है, तो काम के प्रति अरुचि तथा अकुशलता उत्पन्न होती है। इसलिए श्रम-विभाजन की आवश्यकता से जाति-प्रथा की उपयोगिता सिद्ध नहीं होती।

चरण 4: निष्कर्ष जाति-प्रथा को आवश्यक श्रम-विभाजन बताने का तर्क उसके समर्थकों का है। आंबेडकर इसे जन्म-आधारित, ऊँच-नीच से युक्त श्रमिक-विभाजन बताकर अस्वीकार करते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले समर्थकों का तर्क लिखिए, फिर 'श्रम-विभाजन' और 'श्रमिकों के विभाजन' का अंतर देकर आंबेडकर का खंडन स्पष्ट कीजिए।

11(ख). लुट्टन पहलवान को राजा जी की कृपादृष्टि कब प्राप्त हुई? उसके बाद उसके रहन-सहन में क्या परिवर्तन आया? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी 'पहलवान की ढोलक' में लुट्टन की कुश्ती-कला और उसका राजाश्रय उसकी जीवन-स्थिति में परिवर्तन लाते हैं।
- उत्तर में कृपादृष्टि प्राप्त होने का प्रसंग और उसके बाद रहन-सहन में आया परिवर्तन, दोनों अलग-अलग स्पष्ट करने हैं।

चरण 1: मेले की कुश्ती का प्रसंग बताइए श्यामनगर के मेले में लुट्टन ने प्रसिद्ध पहलवान चाँद सिंह को चुनौती दी। चाँद सिंह को 'शेर के बच्चे' के नाम से जाना जाता था। लुट्टन को किसी प्रतिष्ठित गुरु का संरक्षण नहीं मिला था; वह ढोल की ध्वनि से उत्साह और दाँव-पेंच का संकेत पाता था। सबकी आशंका के बावजूद उसने पूरे साहस से कुश्ती लड़ी और चाँद सिंह को पराजित कर दिया।

चरण 2: विजय से मिले राजाश्रय को स्पष्ट कीजिए इस अप्रत्याशित जीत और लुट्टन की प्रतिभा से राजा श्यामानंद प्रभावित हुए। उन्होंने लुट्टन को अपना दरबारी पहलवान बना लिया। इसी विजय के बाद उसे राजा जी की कृपादृष्टि प्राप्त हुई। अब उसकी पहचान केवल गाँव के एक युवक की नहीं रही, बल्कि राजसम्मान प्राप्त पहलवान की हो गई।

चरण 3: रहन-सहन में आए परिवर्तन लिखिए राजाश्रय मिलने पर लुट्टन की भोजन और अन्य आवश्यकताओं की चिंता दूर हो गई। उसे अच्छा और पर्याप्त भोजन मिलने लगा तथा उसका जीवन सुख-सुविधापूर्ण हो गया। सम्मान और निश्चिंतता के कारण उसका शरीर भी

पुष्ट हो गया। वह मेलों में लंबा चोंगा पहनकर, अस्त-व्यस्त पगड़ी बाँधकर और मतवाले हाथी की तरह झूमता हुआ चलता था। उसके इस ठाठ और आत्मविश्वास से उसके रहन-सहन में आया परिवर्तन दिखाई देता है।

चरण 4: निष्कर्ष चाँद सिंह को हराने पर लुट्टन राजा श्यामानंद का कृपापात्र और दरबारी पहलवान बना। राजाश्रय से उसे भोजन, सुख-सुविधाएँ तथा सम्मान मिले और उसका रहन-सहन ठाट-बाट वाला हो गया।

त्वरित सुझाव: इस उत्तर का क्रम रखिए: श्यामनगर का मेला, चाँद सिंह पर विजय, दरबारी पहलवान का पद और फिर भोजन व पहनावे में परिवर्तन।

11(ग). चार्ली चैप्लिन के व्यक्तित्व की तीन विशेषताओं पर प्रकाश डालिए? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विष्णु खरे का पाठ चार्ली की लोकप्रियता को उनके मानवीय व्यक्तित्व और साधारण मनुष्य से जुड़े अभिनय के माध्यम से समझाता है।
- व्यक्तित्व की विशेषताओं को केवल विशेषणों में न लिखकर उनकी कला, जीवनानुभव और दर्शक पर प्रभाव से जोड़ना चाहिए।

चरण 1: साधारण मनुष्य से आत्मीयता स्पष्ट कीजिए चार्ली की पहली विशेषता साधारण और संघर्षशील मनुष्य के प्रति गहरी संवेदनशीलता है। उन्होंने अपने बचपन में गरीबी और असुरक्षा देखी थी। इस अनुभव के कारण उनकी कला में उपेक्षित और कमजोर व्यक्ति की पीड़ा प्रामाणिक रूप में आती है। उनका प्रसिद्ध पर्दे का पात्र बड़ा नायक नहीं, परिस्थितियों से जूझता मामूली आदमी है; इसलिए दर्शक उसमें अपना ही रूप देखते हैं।

चरण 2: करुणा और हास्य का अनोखा मेल बताइए दूसरी विशेषता दुख के बीच भी हँसने और हँसाने की अद्भुत क्षमता है। चार्ली की प्रस्तुतियों में हास्य और करुणा साथ-साथ चलते हैं। वे अपनी कठिनाइयों, असफलताओं और हास्यास्पद स्थितियों को अभिनय का विषय बनाते हैं। दर्शक उनकी हरकतों पर हँसता है, पर साथ ही उस बेचारे मनुष्य के दुख को भी महसूस करता है। यह संवेदनशील हास्य उनकी विशिष्ट पहचान है।

चरण 3: सार्वभौम मानवीय आकर्षण समझाइए तीसरी विशेषता उनकी सहज, आत्मीय और सबको जोड़ने वाली अभिव्यक्ति है। उनका अभिनय चेहरे, शरीर और परिस्थितियों के माध्यम से मनुष्य की मूल भावनाएँ व्यक्त करता है। इसलिए अलग-अलग भाषाओं और संस्कृतियों के दर्शक भी उनसे जुड़ सकते हैं। वे दर्शकों को किसी ऊँचे आदर्श की मूर्ति बनकर प्रभावित नहीं करते, बल्कि अपनी कमजोरियों समेत परिचित इंसान बनकर उनके मन में जगह बनाते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष चार्ली के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ हैं: साधारण मनुष्य के प्रति संवेदनशीलता, हास्य और करुणा का अद्भुत समन्वय तथा देश-भाषा की सीमाओं से परे पहुँचने वाली सहज मानवीय आत्मीयता।

त्वरित सुझाव: तीन विशेषताओं के साथ उनका आधार भी लिखिए: गरीबी का अनुभव, दुख में हास्य और सामान्य मनुष्य के रूप में विश्वव्यापी पहचान।

11(घ). हजारीप्रसाद द्विवेदी ने शिरीष को 'कालजयी अवधूत' क्यों माना है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हजारीप्रसाद द्विवेदी शिरीष के स्वभाव में कठिन परिस्थितियों के बीच भी प्रसन्न, अनासक्त और उदार रहने का जीवन-संदेश देखते हैं।
- 'कालजयी' का भाव समय और प्रतिकूल परिस्थितियों से पराजित न होना है; 'अवधूत' सांसारिक बंधनों से मुक्त, मस्त और अनासक्त साधु को कहते हैं।

चरण 1: प्रतिकूल मौसम में शिरीष की दशा देखिए तीखी गर्मी, लू और सूखे वातावरण में जब दूसरे वृक्षों की दशा दयनीय हो जाती है,

तब भी शिरीष हरा-भरा रहता है और अपने कोमल फूलों से खिलता रहता है। बाहर की कठोर परिस्थितियाँ उसके भीतर की जीवनी-शक्ति को समाप्त नहीं कर पातीं। वह विपत्ति के सामने मुरझाकर हार मान लेने के बजाय अपनी सहज प्रसन्नता बनाए रखता है। इसी अर्थ में लेखक उसे कालजयी कहते हैं।

चरण 2: अनासक्ति और मस्ती का संबंध समझिए अवधूत की तरह शिरीष बाहरी सुख-दुख से विचलित नहीं होता। वह अपनी मस्ती में रहता है और संसार को सुंदरता तथा सरसता देता है। उसके फूलों की कोमलता और भीषण गर्मी को सहने की क्षमता साथ-साथ दिखाई देती हैं। यह स्वभाव बताता है कि कठोर परिस्थितियों का सामना करने के लिए मन का कठोर और नीरस हो जाना आवश्यक नहीं है।

चरण 3: लेखक का मानवीय संकेत स्पष्ट कीजिए शिरीष का यह रूप मनुष्य को विपत्तियों में धैर्य, निर्लिप्तता और जीवन के प्रति आस्था बनाए रखने की प्रेरणा देता है। वह वातावरण की कठिनाइयों से ऊपर उठकर अपनी सृजनशीलता और उदारता बचाए रखता है। यहाँ काल पर विजय का अर्थ पेड़ का अमर हो जाना नहीं, बल्कि समय के आघातों के सामने उसके जीवंत स्वभाव का अपराजित बने रहना है।

चरण 4: निष्कर्ष शिरीष भीषण गर्मी और लू में भी खिलता हुआ, मस्त तथा अनासक्त रहता है। प्रतिकूल समय में उसकी अपराजेय जीवनी-शक्ति और अवधूत जैसी निर्लिप्तता के कारण द्विवेदी जी ने उसे 'कालजयी अवधूत' माना है।

त्वरित सुझाव: 'कालजयी' के लिए भीषण गर्मी में खिलने का उदाहरण और 'अवधूत' के लिए अनासक्ति तथा मस्ती का गुण अलग-अलग समझाइए।

11(ङ). 'बाज़ार दर्शन' में ग्राहकों के किन प्रकारों की चर्चा हुई है? आप अपने को किस श्रेणी का ग्राहक मानते हैं? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जैनेंद्र कुमार का निबंध खरीदारी में आवश्यकता, विवेक और आत्मसंयम का महत्त्व समझाता है। ग्राहक का मन स्पष्ट हो तो बाज़ार उपयोगी बनता है।
- ग्राहकों का भेद केवल धन के आधार पर नहीं, बल्कि उनके उद्देश्य और बाज़ार के आकर्षण के प्रति उनके व्यवहार के आधार पर समझना चाहिए।

चरण 1: आकर्षण में आने वाले ग्राहक एक प्रकार के ग्राहक भरी जेब और खाली मन लेकर बाज़ार जाते हैं। उन्हें अपनी वास्तविक आवश्यकता स्पष्ट नहीं होती। वस्तुओं की सजावट और आकर्षण देखकर वे अनावश्यक सामान खरीद लेते हैं। निबंध में लेखक के मित्र और उनकी पत्नी की खरीदारी इस प्रवृत्ति को सामने लाती है। ऐसे ग्राहकों को खरीदने के समय सुख मिलता है, पर बाद में बहुत-सी चीज़ें व्यर्थ लगती हैं। कुछ लोग अपनी क्रयशक्ति का प्रदर्शन करने में भी संतोष खोजते हैं।

चरण 2: अनिर्णय के कारण खाली हाथ लौटने वाले ग्राहक एक और प्रकार के ग्राहक को बाज़ार की सभी वस्तुएँ अच्छी लगती हैं। वह तय नहीं कर पाता कि किसे खरीदे और किसे छोड़े। सब कुछ खरीदना संभव नहीं होता, इसलिए वह अंततः बिना कुछ खरीदे लौट आता है। लेखक के दूसरे मित्र का अनुभव इस अनिर्णय को प्रकट करता है। यहाँ खाली हाथ लौटना आवश्यकताओं की स्पष्ट समझ से उपजा संयम नहीं, बल्कि आकर्षणों के बीच चुनाव न कर पाने का परिणाम है।

चरण 3: निश्चित आवश्यकता वाले ग्राहक दूसरे प्रकार के ग्राहक जानते हैं कि उन्हें क्या चाहिए। वे उपयोग की वस्तु लेते हैं और दूसरी वस्तुओं के मोह में नहीं फँसते। भगत जी का व्यवहार इसका उदाहरण है। वे बाज़ार से अपने काम का जीरा और काला नमक लेते हैं; भरी दुकानों का आकर्षण उन्हें विचलित नहीं करता। ऐसे व्यक्ति बाज़ार से उचित लाभ लेते हैं और उसे आवश्यकता पूरी करने का साधन बनाए रखते हैं।

चरण 4: अपनी ग्राहक-श्रेणी का चुनाव मैं अपने को आवश्यकता और विवेक से खरीदारी करने वाले ग्राहक की श्रेणी में रखना चाहता हूँ। सामान लेने से पहले सूची बनाना, उसकी उपयोगिता तथा कीमत देखना और केवल दिखावे या विज्ञापन से प्रभावित होकर खरीदारी न करना मेरी प्राथमिकता होगी। इससे पैसे की बचत होगी और वस्तुओं का अनावश्यक संग्रह भी नहीं होगा।

चरण 5: निष्कर्ष निबंध में आकर्षण में अनावश्यक सामान खरीदने वाले, सब कुछ अच्छा लगने से चयन न कर पाने वाले और निश्चित आवश्यकता के अनुसार खरीदने वाले ग्राहक उभरते हैं। मेरा आदर्श भगत जी जैसा विवेकशील ग्राहक है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में ग्राहक की मानसिकता, उसका व्यवहार और अपना चुनाव—इन तीनों को जोड़ें; भगत जी का उदाहरण विवेकपूर्ण खरीदारी स्पष्ट करता है।

12(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: यशोधर पंत को अपने बच्चों की तरक्की अच्छी भी लगती है और 'समहाउ इंप्रौपर भी'। कारण स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी में यशोधर पंत की पुरानी जीवन-दृष्टि और बच्चों की आधुनिक आकांक्षाओं के बीच पीढ़ियों का अंतर दिखाई देता है।
- बच्चों की उपलब्धि से होने वाला पिता का गर्व और उनके तौर-तरीकों के प्रति असहजता साथ-साथ मौजूद हो सकते हैं।

चरण 1: तरक्की से मिलने वाला संतोष यशोधर पंत ने सीमित साधनों में जीवन बिताया है। इसलिए बच्चों का पढ़-लिखकर आगे बढ़ना और आर्थिक रूप से समर्थ बनना उन्हें प्रसन्न करता है। बड़े बेटे भूषण की अच्छी नौकरी और ऊँचा वेतन परिवार की उन्नति के संकेत हैं। एक पिता के रूप में वे बच्चों का उज्ज्वल भविष्य चाहते हैं; उनकी क्षमता और सफलता पर उन्हें संतोष भी होता है।

चरण 2: आधुनिक जीवन-दृष्टि से असहजता पंत जी सादगी, मर्यादा, पारिवारिक आत्मीयता और पुराने संस्कारों में विश्वास करते हैं। बच्चों की जीवन-शैली में वेतन, सुविधाओं, फैशन और आधुनिक ढंग का महत्त्व बढ़ गया है। बेटे की बहुत अधिक आमदनी भी उनके पुराने अनुभवों के अनुरूप नहीं बैठती। घर के निर्णयों और उत्सवों में बच्चों की पसंद प्रधान होने से उन्हें लगता है कि उनकी अपनी मान्यताओं और स्थान का महत्त्व घट रहा है।

चरण 3: दोहरी प्रतिक्रिया का कारण शादी की वर्षगाँठ को सिल्वर वैडिंग के रूप में मनाने और आधुनिक उपहारों जैसे प्रसंगों में यही दूरी व्यक्त होती है। वे बच्चों का स्नेह समझते हैं, फिर भी अपनी परिचित संस्कृति से अलग उसका रूप उन्हें स्वाभाविक नहीं लगता। इसीलिए वे उन्नति का स्वागत करते हुए भी उसके साथ आई जीवन-पद्धति को कुछ अनुचित अनुभव करते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष बच्चों की सफलता पंत जी को पिता के रूप में सुख देती है, लेकिन उससे जुड़ी आधुनिकता, प्रदर्शन और पुरानी मान्यताओं की उपेक्षा उन्हें खटकती है। उनकी दुविधा पीढ़ियों के मूल्य-संघर्ष का परिणाम है।

त्वरित सुझाव: अच्छा लगने का कारण और अनुचित लगने का कारण अलग समझाएँ; भूषण की नौकरी तथा सिल्वर वैडिंग का प्रसंग दोनों पक्ष स्पष्ट करते हैं।

12(ख). ऐन ने अपनी डायरी को किट्टी को संबोधित कर क्यों लिखा होगा? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन फ्रैंक के लिए डायरी आत्माभिव्यक्ति और मन का बोझ हल्का करने का माध्यम थी। उसे अपने अंतर्मन को समझने वाले विश्वासपात्र की आवश्यकता थी।
- किसी निर्जीव माध्यम को नाम देकर संबोधित करना उसे आत्मीय साथी का रूप देता है; इससे निजी अनुभव सहजता से व्यक्त होते हैं।

चरण 1: आत्मीय मित्र की कमी ऐन के जीवन में परिवार और परिचित होने पर भी उसे ऐसा सच्चा मित्र नहीं मिलता था जिसके सामने वह अपने मन की हर बात निस्संकोच कह सके। किशोरावस्था की उलझनें, अपने बारे में विचार और दूसरों के व्यवहार से उत्पन्न अनुभूतियाँ उसके भीतर जमा होती थीं। उन्हें बिना झिझक बाँटने के लिए वह किसी धैर्यवान और विश्वसनीय साथी की खोज में थी।

चरण 2: किट्टी के रूप में डायरी का मानवीकरण इसी आवश्यकता के कारण उसने डायरी को किट्टी नाम दिया और उसे मित्र की तरह संबोधित किया। इस प्रकार लिखना घटनाओं का यांत्रिक विवरण नहीं रह गया, बल्कि एक आत्मीय सहेली से बातचीत बन गया। किट्टी के सामने वह भय, आशा, शिकायत, अकेलापन और सपने खुलकर रख सकती थी। डायरी न उसे बीच में रोकती थी, न उसकी भावनाओं पर निर्णय सुनाती थी।

चरण 3: कठिन परिस्थितियों में भावनात्मक सहारा नाज़ी अत्याचार और छिपकर रहने की कठिन परिस्थितियों ने ऐन की स्वतंत्रता तथा

सामान्य सामाजिक जीवन को सीमित कर दिया था। ऐसे में यह काल्पनिक संवाद उसे मानसिक राहत और आत्मबल देता था। पत्र जैसी संबोधन-शैली ने उसकी डायरी को अत्यंत निजी, जीवंत और संवेदनशील बना दिया।

चरण 4: निष्कर्ष ऐन ने डायरी को किट्टी मानकर संबोधित किया ताकि वह एक विश्वसनीय सहेली से मन की बातें कह सके। यह संबोधन उसके अकेलेपन को कम करने और सहज आत्माभिव्यक्ति का उपाय था।

त्वरित सुझाव: किट्टी को वास्तविक सहेली न बताएँ; डायरी को दिया गया आत्मीय नाम बताकर विश्वासपात्र की आवश्यकता और मानसिक सहारे से जोड़ें।

12(ग). पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए कि सिंधु सभ्यता ताकत से शासित नहीं थी, समझ से अनुशासित सभ्यता थी। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ओम थानवी के पाठ में सिंधु सभ्यता का मूल्यांकन पुरातात्त्विक अवशेषों और नगर-व्यवस्था के आधार पर किया गया है।
- सुव्यवस्थित सामुदायिक जीवन और जनोपयोगी निर्माण नागरिक समझ तथा अनुशासन के संकेत हैं; राजकीय शक्ति के प्रदर्शन से उनका स्वरूप अलग होता है।

चरण 1: सत्ता के प्रदर्शन का अभाव सिंधु सभ्यता के अवशेषों में भव्य राजमहलों, विशाल मंदिरों और किसी राजा की प्रभुता दिखाने वाले विराट स्मारकों का वैसा प्रभुत्व नहीं दिखता जैसा अनेक दूसरी प्राचीन सभ्यताओं में मिलता है। हथियारों का भी बड़ा भंडार नहीं मिलता। इसलिए पाठ इस सभ्यता की प्रमुख पहचान सैनिक आतंक या शासक के वैभव में नहीं खोजता। यहाँ साधारण नागरिक जीवन को अपेक्षाकृत अधिक महत्त्व मिला हुआ दिखाई देता है।

चरण 2: जनहित पर आधारित नगर-योजना मोहनजोदड़ो की सड़कों, गलियों, मकानों, कुओं, स्नानागारों और जल-निकासी की सुविचारित व्यवस्था सामूहिक सुविधा का प्रमाण है। घरों के उपयोग किए गए पानी को निकालने की व्यवस्था और नगर की स्वच्छता का ध्यान दिखाता है कि लोग सार्वजनिक जीवन की आवश्यकताओं को समझते थे। इन व्यवस्थाओं का संचालन परस्पर सहयोग तथा नियमित सामाजिक अनुशासन से ही संभव था।

चरण 3: सभ्यता के चरित्र का निष्कर्ष कलाकृतियों और उपयोगी वस्तुओं में भी सुघड़ता तथा सौंदर्यबोध दिखाई देता है। इससे ऐसे समाज का चित्र बनता है जिसकी उन्नति केवल शक्तिशाली व्यक्तियों के प्रदर्शन पर आधारित नहीं थी। पाठ के अनुसार नागरिकों की साझा समझ, व्यवस्था का सम्मान और जीवन को सुचारु बनाने की चेतना इस सभ्यता की विशिष्टता थी।

चरण 4: निष्कर्ष राजसत्ता और हथियारों के प्रदर्शन की अपेक्षा नागरिक सुविधाओं तथा सुव्यवस्थित नगर-जीवन को मिली प्रधानता सिद्ध करती है कि सिंधु सभ्यता समझ से अनुशासित थी।

त्वरित सुझाव: दावे के समर्थन में दोनों प्रकार के प्रमाण दें: शक्ति-प्रदर्शन का अभाव और जल-निकासी, कुओं तथा नगर-योजना जैसी नागरिक सुविधाओं की उपस्थिति।

13(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: कार्यालय में सेक्शन आफीसर वाई.डी. पंत और उसके सहयोगियों के सम्बन्धों पर अपना मत व्यक्त कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यशोधर पंत कार्यालय में अनुभवी सेक्शन अफ़सर हैं। उनकी परंपरागत दृष्टि और युवा सहकर्मियों के आधुनिक व्यवहार में अंतर है।
- सहकर्मियों के व्यवहार का मूल्यांकन करते समय आत्मीयता, मज़ाक और वरिष्ठ के प्रति आवश्यक संवेदनशीलता—तीनों को देखना चाहिए।

चरण 1: संबंधों में सहजता और अपनापन कार्यालय में पंत जी और उनके सहयोगियों के संबंध केवल औपचारिक नहीं हैं। सहकर्मी उनसे हँसी-मज़ाक करते हैं और उनकी शादी के पच्चीस वर्ष पूरे होने पर जलपान की माँग करते हैं। पंत जी भी बातचीत तथा परिहास में भाग लेते हैं। इस तरह उनके बीच परिचय, सहजता और अपनापन दिखाई देता है; पद का अंतर बातचीत को पूरी तरह बाधित नहीं करता।

चरण 2: पीढ़ीगत अंतर और मेरा मत युवा सहकर्मियों की आधुनिक आदतें और चुहल कभी-कभी पंत जी की पुरानी जीवन-दृष्टि से मेल नहीं खातीं। इसलिए संबंधों में सम्मान के साथ हल्की खींचतान और असहजता भी है। मेरे मत में ऐसा सहज वातावरण अच्छा है, पर मज़ाक में वरिष्ठ की गरिमा और संवेदनाओं का ध्यान रखना चाहिए। पंत जी को भी नई पीढ़ी की आत्मीयता के बदले हुए ढंग को समझने का प्रयास करना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष पंत जी और सहकर्मियों के संबंध आत्मीय तथा अनौपचारिक हैं, किंतु पीढ़ियों के अंतर से उनमें कुछ तनाव भी आता है। परस्पर सम्मान और संवेदनशीलता उन्हें अधिक संतुलित बना सकते हैं।

त्वरित सुझाव: कार्यालय के संबंधों पर उत्तर देते समय जलपान की माँग और हँसी-मज़ाक का प्रसंग दें, फिर अपने मत में आत्मीयता के साथ मर्यादा का पक्ष रखें।

13(ख). '' 'जूझ' कहानी गँवई जीवन के खुरदुरे यथार्थ और उसके परिवेश की गाथा है।" इस कथन पर टिप्पणी कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'जूझ' में आनंदा की पढ़ने की आकांक्षा और उसके ग्रामीण परिवार की कठिन परिस्थितियों के बीच संघर्ष दिखाई देता है।
- गँवई जीवन का खुरदुरा यथार्थ गरीबी, खेती के कठोर श्रम, शिक्षा के प्रति उपेक्षा और पारिवारिक दबाव से सामने आता है।

चरण 1: ग्रामीण जीवन की कठिनाइयाँ पहचानिए आनंदा का बचपन खेतों में काम करने और पशु चराने जैसी जिम्मेदारियों में बीतता है। पिता उसे खेती के काम में लगाना चाहते हैं और उसकी पढ़ाई रोक देते हैं। इस प्रकार बालक की इच्छा से अधिक महत्त्व परिवार के काम को मिलता है। पिता की कठोरता और माँ की विवशता गाँव के घरेलू जीवन का कटु पक्ष प्रकट करती है।

चरण 2: शिक्षा के लिए संघर्ष को परिवेश से जोड़िए आनंदा को विद्यालय वापस जाने के लिए माँ के साथ दत्ता जी राव का सहारा लेना पड़ता है। पढ़ने की अनुमति मिलने पर भी खेती का काम करना आवश्यक रहता है। फिर भी वह शिक्षकों के मार्गदर्शन से पढ़ाई और कविता की ओर बढ़ता है। ये प्रसंग दिखाते हैं कि ग्रामीण वातावरण में प्रतिभा को आगे बढ़ने के लिए अभाव और विरोध से लगातार जूझना पड़ता है।

चरण 3: निष्कर्ष 'जूझ' गँवई जीवन का यथार्थ चित्र है, क्योंकि इसमें खेती पर निर्भर परिवार की कठिन दिनचर्या, शिक्षा के रास्ते की बाधाएँ और उनसे संघर्ष करती बालप्रतिभा साथ-साथ उभरती हैं।

त्वरित सुझाव: इस टिप्पणी में खेती के श्रम और पढ़ाई के विरोध के दो ठोस प्रसंग देकर उन्हें आनंदा के संघर्ष से जोड़िए।

13(ग). मुअनजो-दड़ो की प्रसिद्धि के दो कारण बताइए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुअनजो-दड़ो सिंधु सभ्यता का प्रमुख पुरातात्त्विक नगर है, जिसके अवशेष प्राचीन शहरी जीवन का परिचय देते हैं।
- उसकी प्रसिद्धि का आधार केवल प्राचीनता नहीं, बल्कि सुव्यवस्थित नगर-योजना और उन्नत नागरिक संस्कृति भी है।

चरण 1: सुव्यवस्थित नगर-योजना का कारण बताइए मुअनजो-दड़ो अपनी योजनाबद्ध बसावट के लिए प्रसिद्ध है। सड़कों और गलियों की व्यवस्था, पक्की ईंटों के मकान तथा जल-निकासी की नालियाँ वहाँ के उन्नत नगर-निर्माण का प्रमाण हैं। इनसे पता चलता है कि उस प्राचीन नगर में नागरिक सुविधाओं और सफाई का ध्यान रखा जाता था।

चरण 2: पुरातात्त्विक और सांस्कृतिक महत्त्व स्पष्ट कीजिए वहाँ का विशाल स्नानागार और उत्खनन में मिली मुहरें, मूर्तियाँ तथा अन्य वस्तुएँ सिंधु सभ्यता की समृद्ध संस्कृति को प्रकट करती हैं। इन अवशेषों से लोगों के रहन-सहन, कला और सामूहिक जीवन की जानकारी मिलती है। इसी कारण यह नगर प्राचीन सभ्यता के अध्ययन का महत्त्वपूर्ण केंद्र है।

चरण 3: निष्कर्ष मुअनजो-दड़ो की प्रसिद्धि के दो प्रमुख कारण हैं: उसकी विकसित नगर-योजना तथा विशाल स्नानागार और अन्य अवशेषों में सुरक्षित समृद्ध सिंधु संस्कृति।

त्वरित सुझाव: दो कारण लिखते समय एक में नगर-योजना और दूसरे में सांस्कृतिक अवशेष रखिए; प्रत्येक के साथ एक स्पष्ट उदाहरण दीजिए।

14. ऐन फ्रेंक ने अपनी डायरी में अपने समय में स्त्रियों की दशा के बारे में क्या कहा है? आज इन परिस्थितियों में क्या-क्या परिवर्तन आए हैं? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन फ्रेंक स्त्रियों की असमान स्थिति पर प्रश्न उठाती है और समाज में उनके श्रम, क्षमता तथा मातृत्व को उचित सम्मान देने की माँग करती है।
- उत्तर में ऐन के समय की दशा और वर्तमान स्थिति को अलग-अलग स्पष्ट करते हुए प्रगति तथा शेष असमानता, दोनों पर विचार करना आवश्यक है।

चरण 1: ऐन के समय की असमान स्थिति स्पष्ट कीजिए ऐन फ्रेंक के अनुसार पुरुषों ने अपनी अधिक शारीरिक शक्ति के आधार पर स्त्रियों पर अधिकार जमाया और उन्हें अपने से नीचे स्थान दिया। पुरुष कमाई करके लाते थे, बच्चे पैदा करते थे और अपनी इच्छा चलाते थे, जबकि स्त्रियों का कार्य बच्चों को जन्म देना तथा उनकी देखभाल करना मान लिया गया था। लंबे समय तक स्त्रियाँ इस अन्याय को सहती रहीं। ऐन इस व्यवस्था को उचित नहीं मानती, क्योंकि स्त्रियों की क्षमता को केवल घरेलू भूमिका तक सीमित करके नहीं आँका जा सकता।

चरण 2: स्त्री के योगदान और जागृति पर ऐन के विचार बताइए ऐन का मानना है कि शिक्षा, काम और प्रगति ने स्त्रियों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाया। वह चाहती है कि स्त्रियों को पूर्ण सम्मान मिले। बच्चे को जन्म देने में माँ जो पीड़ा और जोखिम सहती है, उसका महत्त्व भी स्वीकार किया जाना चाहिए। ऐन सैनिकों के साहस को मिलने वाले सम्मान की तुलना मातृत्व के उपेक्षित साहस से करती है। उसका आशय है कि मानव-समाज को आगे बढ़ाने में स्त्री का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, इसलिए उसे कमतर समझना अन्याय है।

चरण 3: आज आए सकारात्मक परिवर्तनों का उल्लेख कीजिए आज अनेक स्त्रियाँ शिक्षा प्राप्त करके आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही हैं। वे अध्यापन, चिकित्सा, विज्ञान, प्रशासन, राजनीति, खेल और अन्य कार्यक्षेत्रों में अपनी योग्यता दिखा रही हैं। परिवार और समाज के निर्णयों में उनकी भागीदारी बढ़ी है। उनके व्यक्तित्व को केवल पत्नी या माँ की भूमिका से नहीं, उनकी अपनी उपलब्धियों और आकांक्षाओं से भी पहचान मिलने लगी है। लड़कियों की शिक्षा और स्त्री-पुरुष समानता के प्रति सामाजिक जागरूकता भी बढ़ी है।

चरण 4: शेष समस्याओं के आधार पर संतुलित तुलना कीजिए इन परिवर्तनों के बावजूद सभी स्त्रियों की स्थिति एक जैसी नहीं हुई है। कई परिवारों में लड़कियों को पढ़ाई और काम के समान अवसर नहीं मिलते। घरेलू श्रम का असमान बोझ, निर्णय लेने की सीमित स्वतंत्रता और स्त्री के प्रति भेदभाव अब भी दिखाई देते हैं। इसलिए बाहरी कार्यक्षेत्र में प्रवेश के साथ घर के भीतर सम्मान और जिम्मेदारियों की साझेदारी भी आवश्यक है। ऐन का उठाया प्रश्न आज भी समान गरिमा और अवसर की माँग के रूप में प्रासंगिक है।

चरण 5: निष्कर्ष ऐन ने पुरुष-प्रधान समाज में स्त्रियों की अधीनता, उपेक्षित श्रम और मातृत्व के अपर्याप्त सम्मान की आलोचना की। आज शिक्षा, आत्मनिर्भरता और सामाजिक भागीदारी से उनकी स्थिति में सुधार आया है, किंतु पूर्ण समानता के लिए सोच और व्यवहार में आगे परिवर्तन आवश्यक हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर को 'ऐन के विचार', 'आज की प्रगति' और 'शेष समस्याएँ' में बाँटिए; मातृत्व के सम्मान का पाठ-विशिष्ट बिंदु अवश्य जोड़िए।

अथवा

14. 'सिल्वर वेडिंग' कहानी के आधार पर यशोधर पंत के चरित्र की चार प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-चित्रण में पात्र की विशेषता को उसके व्यवहार, विचार और कहानी के प्रसंग से स्पष्ट किया जाता है।
- मनोहर श्याम जोशी की 'सिल्वर वैडिंग' में यशोधर पंत पुराने जीवन-मूल्यों और परिवार की आधुनिक जीवन-दृष्टि के बीच द्वंद्व अनुभव करते हैं।

चरण 1: सादगी और परंपराप्रियता स्पष्ट कीजिए यशोधर पंत सादा जीवन तथा पुराने संस्कारों में विश्वास रखने वाले व्यक्ति हैं। वे आधुनिक जीवन की दिखावटी तड़क-भड़क को सहज रूप से स्वीकार नहीं कर पाते। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर बच्चों द्वारा आयोजित 'सिल्वर वैडिंग' का उत्सव उन्हें असहज करता है। जिस आयोजन को बच्चे अपनी खुशी और प्रतिष्ठा की अभिव्यक्ति मानते हैं, वह उनकी जीवन-दृष्टि से मेल नहीं खाता। यह प्रसंग उनकी परंपराप्रियता के साथ बदलते समय के प्रति उनके संकोच को भी सामने लाता है।

चरण 2: कर्तव्यनिष्ठा और जिम्मेदारी बताइए वे नौकरी और परिवार के प्रति जिम्मेदारी निभाने वाले व्यक्ति हैं। कार्यालय में अपने पद और काम की मर्यादा बनाए रखते हैं तथा घर की आवश्यकताओं से भी मुँह नहीं मोड़ते। परिवार की नई पीढ़ी उनके तौर-तरीकों से सहमत नहीं होती, फिर भी वे अपनी जिम्मेदारियाँ निभाते रहते हैं। बेटे द्वारा दिए गए गाउन के प्रसंग में सुबह दूध लेने जाने का उल्लेख उनके नियमित घरेलू दायित्व का भी संकेत देता है।

चरण 3: कृतज्ञता और आत्मीय संबंधों का मूल्य दिखाइए यशोधर पंत किशन दा के सहयोग और मार्गदर्शन को नहीं भूलते। किशन दा उनके लिए केवल परिचित व्यक्ति नहीं, जीवन को दिशा देने वाले आदर्श हैं। वे कठिन परिस्थितियों में उनकी सीख और जीवन-पद्धति को याद करते हैं। किशन दा के जीवन और अकेलेपन का स्मरण उन्हें भीतर तक प्रभावित करता है। इससे उनकी कृतज्ञता, आत्मीयता तथा पुराने संबंधों के प्रति निष्ठा प्रकट होती है।

चरण 4: संवेदनशीलता और आंतरिक द्वंद्व समझाइए वे बाहर से अनुशासनप्रिय दिखाई देते हैं, किंतु भीतर से अत्यंत संवेदनशील हैं। बच्चों की सफलता से उन्हें प्रसन्नता होती है, पर उनकी सोच और अपने मूल्यों का अंतर उन्हें अकेला करता है। बेटे का गाउन उन्हें उपहार तो देता है, लेकिन वे उससे अधिक आत्मीय चिंता चाहते हैं। उनके मन में यह अपेक्षा उठती है कि बेटा स्वयं सुबह दूध लाने की जिम्मेदारी ले। इस प्रसंग से स्पष्ट है कि वे भौतिक उपहार से अधिक स्नेह और सहभागिता को महत्त्व देते हैं।

चरण 5: निष्कर्ष यशोधर पंत की चार प्रमुख विशेषताएँ सादगी और परंपराप्रियता, कर्तव्यनिष्ठा, कृतज्ञता तथा संवेदनशीलता हैं। उनके चरित्र में पारिवारिक लगाव के साथ पीढ़ियों के बदलते मूल्यों से उत्पन्न द्वंद्व भी दिखाई देता है।

त्वरित सुझाव: चार विशेषताएँ लिखते समय प्रत्येक के साथ कहानी का एक प्रसंग जोड़िए; गाउन वाले प्रसंग से उपहार और आत्मीय देखभाल का अंतर स्पष्ट कीजिए।